राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 2 ■ अंक 2 ■ मई 2018 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 32

सूखे का सामना करने में सक्षम नहीं देश का दो तिहाई हिस्सा

सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों से होगा अपराधमुक्त भारत 11

ASPIRATIONAL DISTRICTS TO BUILD FOUNDATION OF NEW BHARAT 15

छात्रों के हित के लिए कृतसंकल्प है एआईसीटीई: अनिल सहस्त्रबुद्धे 17

परिषद् गतिविधियां

मेघालय प्रांतीय अधिवेशन को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान

जम्मू कश्मीर प्रांत द्वारा आयोजित "टेक्नोत्सव" कार्यक्रम का उदघाटन करते अभाविप के राष्ट्रीय सह–संगठन मंत्री श्रीनिवास, एआईसीटीई के चेयरमैन प्रा. अनिल सहस्त्रबुद्धे व अन्य

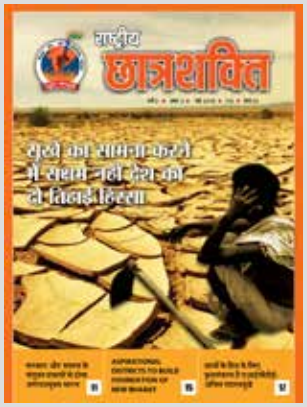

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 2, अंक 2
मई, 2018

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रित।

इस अंक में

05 **सूखे का सामना करने में सक्षम नहीं देश का दो तिहाई हिस्सा**
हिमाचल प्रदेश के किसान सेब की खेती छोड़ रहे हैं, मिजोरम...

संपादकीय	04
अनुभूति बने समाज का हिस्सा : शिवराज सिंह चौहान	10
सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों से होगा अपराधमुक्त भारत	11
धन हासिल करना ही सब कुछ नहीं, चरित्र निर्माण करें युवा : राजनाथ	14
ASPIRATIONAL DISTRICTS TO BUILD FOUNDATION OF NEW BHARAT	15
छात्रों के हित के लिए कृतसंकल्प है एआईसीटीई : अनिल सहस्त्रबुद्धे	17
नोटबन्दी से पारदर्शी हुई है आर्थिक व्यवस्था	18
डीयू प्रशासन के खिलाफ अभाविप का प्रदर्शन	20
प्रतिभावान छात्रों के लिए सुनहरा अवसर	21
राष्ट्रमंडल खेल: 'सोने' से चमकी भारतीय प्रतिभा	24
विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा पर्यावरण पर आयोजित कार्यशाला संपन्न	27
अभाविप द्वारा आयोजित मीडिया कार्यशाला में छात्रों ने सीखे प्रभावी संवाद के गुर	28
संसद गतिरोध: आखिर कौन है जिम्मेदार..?	29

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

5 मई 1818 को पश्चिमी विचारक कार्ल मार्क्स का जन्म हुआ। गत दो शताब्दियों में उनके विचारों से प्रभावित हो विश्व की एक बड़ी जनसंख्या ने यथास्थिति को चुनौती देते हुए बेहतर जीवन की कल्पना में संघर्ष का रास्ता अपनाया। दो शताब्दियों की इस यात्रा में दुनियां के अनेक देश इस वैचारिक उथल-पुथल का हिस्सा बने, अनेक में इसके माध्यम से राजनैतिक परिवर्तन आया, कुछ देशों में इस पर आधारित शासन प्रणाली आज भी वजूद में है, तो ज्यादातर ने इसके परिणामों से बौखला कर साम्यवाद का लबादा उतार फेंका।

शताब्दी का यह अवसर उनके विचार और उसके परिणाम के मूल्यांकन का निमित्त तो बनेगा ही। यह तो स्वीकार करना ही होगा कि मार्क्स ने जो दर्शन दिया उसमें पूंजीवाद और सामंतवाद से सताये लोगों के लिये बंधनों को तोड़ अपना भविष्य खुद गढ़ सकने का एक सुनहला सपना था जिसे उनकी युवा पीढ़ी ने हाथों-हाथ लिया। उनके जीते-जी यह प्रयोग कल्पना मात्र ही रहा लेकिन मृत्यु के 34 वर्ष बाद रूस में हुई क्रांति ने इसे यथार्थ के रूप में स्थापित किया। आने वाले दशकों में यह अनेक देशों के लिये राजव्यवस्था संचालन का आदर्श बना। 90 का दशक इस विचार के पतन का साक्षी बना और एक के बाद एक, वामपंथी किले ढ़हते चले गये।

किसी भी व्यक्ति के जीवन पर उसके बचपन की छाया रहती है। मार्क्स के जीवन में भी हम इसे अनुभव कर सकते हैं। कार्ल मार्क्स के माता-पिता को जर्मन प्रशिया में अपनी यहूदी आस्थाओं का पालन करते हुए जीविकोपार्जन कठिन हो गया तो उन्हें ईसाई धर्म अपनाना पड़ा। छः वर्ष की उम्र में मार्क्स को भी ईसाइयत की दीक्षा दी गयी। संभवतः यही कारण था जिसने उन्हें आगे चल कर धर्म को अफीम की संज्ञा देने पर विवश किया। उनके सम्मुख धर्म का जो चेहरा सामने आया वह उनकी आस्था को चूर-चूर करने के लिये काफी था। इसी के चलते उनके स्वभाव में विद्रोह का बीच अंकुरित हुआ जिसने उन्हें वकालत के पैत्रिक व्यवसाय से परे पत्रकारिता की ओर आकर्षित किया।

मार्क्स के दर्शन और उनके विद्रोही चरित्र में उन अनेक देशों के युवाओं ने अपने नायक की छाया देखी जो तब अंग्रेजों की गुलामी से आजाद होने के लिये जूझ रहे थे। रूस की क्रांति ने उनमें उमंग जगायी। मानवेन्द्र नाथ राय जैसे अनेक क्रांतिकारियों ने इस मार्ग पर कदम बढ़ाये किन्तु शीघ्र ही यह समझ भी गये कि यह फार्मूला भारत सहित अन्य सभी धर्माधारित संस्कृतियों के लिये नहीं है। धर्म, पूँजी और सत्ता के जिस तरह के घाल-मेल का सामना मार्क्स और उनके देशवासी कर रहे थे वह हजार वर्ष की पराधीनता के बाद भी भारत में लागू नहीं हो सका था। मूल्यों और परंपराओं में जीने वाले भारत के लिये उनके पूर्वज ही उनके नायक थे, खलनायक नहीं। खलनायक के रूप में विदेशी साम्राज्यवाद था जो उसी लंदन से संचालित होता था जहाँ बैठ कर मार्क्स अपना "दास कैपिटल" लिख रहे थे। गुलामी के बंधन तोड़ने का सन्देश देने वाले कार्ल मार्क्स भारत के खलनायक साम्राज्यवाद को न्यायोचित ठहराते हुए इस गुलामी को ही भारत का भाग्योदय बता रहे थे।

मार्क्स का चिंतन पूंजीवाद का ही एक नया स्वरूप था जो था तो पूँजीवाद के इर्द-गिर्द ही, किन्तु इस पूँजी पर व्यक्तिगत नियंत्रण के स्थान पर सत्ता के नियंत्रण की वकालत करता था। "त्याग के साथ भोग" की परिकल्पना रखने वाला भारतीय समाज इसे मूल्य के रूप में स्वीकार ही नहीं कर सकता था, इसलिये कुछ काल तक लोकतांत्रिक प्रक्रिया, सिंद्धांत रूप में साम्यवाद जिससे सहमत नहीं है, में भागीदारी कर आंशिक सफलता पाने के बाद आज वामपंथी भारत में अपना आधार खो चुके हैं। आज देश में उनकी जो गतिविधियाँ बची हुई दिख रही हैं। वह मार्क्स के सिद्धांतों के आधार पर नहीं अपितु भारत विरोधी समूहों के साथ गठजोड़ के कारण है जिसका उदाहरण हम कुछ वर्षों से जेएनयू सहित अनेक विश्वविद्यालयों में घट रही घटनाओं में देख रहे हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अपने जन्म के समय से ही इस विचार के 'अभारतीय चरित्र' को पहचाना और भारतीय मूल्यों के संरक्षण के लिये सदैव संघर्ष जारी रखा। इस प्रयास में शिक्षा जगत का भरपूर साथ मिला जिसने अभाविप को विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन बनाया। संयोग है कि विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में स्थापित होने की घटना भी अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में साम्यवाद के मक्का माने जाने वाले मास्को में ही हुई जहां सारी दुनियां से आये छात्र-नेताओं ने इसे स्वीकार किया। 2018 में जब परिषद अपनी स्थापना के 70 वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है, अपनी इस यात्रा का सिंहावलोकन का अवसर है। संतोष की बात है कि यह एक निरंतर प्रवाहमान और सतत विकासशील यात्रा रही है, देश इसका साक्षी है।

सभी स्थायी स्तंभों के साथ मई अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है, प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामना सहित,
संपादक

सूखे का सामना करने में सक्षम नहीं देश का दो तिहाई हिस्सा

हिमाचल प्रदेश के किसान सेब की खेती छोड़ रहे हैं, मिजोरम में वैकल्पिक खेती आजीविका का साधन बनकर उभर रही है और अरुणाचल प्रदेश में भी जलवायु अनुकूलन के रास्ते खोजे जा रहे हैं। यह जलवायु परिवर्तन की आहट है, जिसके कारण सूखे और ग्रीष्म लहर की दोहरी मार पड़ रही है और देश के पारिस्थितिक तंत्र में सूखे का सामना करने की क्षमता कमजोर हो रही है। जल एवं खाद्य सुरक्षा के लिए यह एक गंभीर चुनौती है।

।उमाशंकर मिश्र।

धरती की आबोहवा बदल रही है और भविष्य की खाद्यान्न सुरक्षा खतरे में हैं। 132 करोड़ की जनसंख्या वाले देश के नीति-नियंता और वैज्ञानिक परेशान हैं कि बढ़ती आबादी, शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के गिरते स्तर के कारण फसलोत्पादन में होने वाली गिरावट को कैसे रोका जाए।

जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। लेकिन, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी के एक ताजा शोध के नतीजों ने इस चिंता को और बढ़ा दिया है। इस शोध के मुताबिक देश के दो तिहाई हिस्से में जलवायु परिवर्तन से पैदा होने वाली समस्याओं का सामना करने की क्षमता नहीं है। देश की 22 नदी घाटियों में से केवल छह के पारिस्थितिकीय तंत्र में जलवायु परिवर्तन,

सूखे और ग्रीष्म लहर की दोहरी चुनौती

सूखे की स्थिति के लिए आमतौर पर कम वर्षा को जिम्मेदार माना जाता है, पर ग्रीष्म लहरों का प्रकोप और बरसात में गिरावट समेत दोनों घटनाएं एक ही समय में हो रही हों तो इसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। वर्ष 1951 से 2010 तक साठ वर्षों के आंकड़ों का अध्ययन करने पर हमने पाया कि एक ही समय में होने वाली सूखे एवं ग्रीष्म लहर की घटनाओं की आवृत्ति और उनका दायरा लगातार बढ़ रहा है।इसका प्रभाव अधिक होने के कारण दोहरी मार झेलनी पड़ती है।

- प्रोफेसर पी.पी. मजूमदार,
वैज्ञानिक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलूरू

खासतौर पर सूखे का सामना करने की क्षमता बची है।

आईआईटी-गुवाहाटी के वैज्ञानिक डॉ. मनीष गोयल के मुताबिक "जिन क्षेत्रों के पारिस्थितिकीय तंत्र की क्षमता जलवायु परिवर्तन के खतरों से लड़ने के लिहाज से कमजोर पायी गई है, वहां इसका सीधा असर खाद्यान्नों के उत्पादन पर पड़ सकता है। भारत जैसे 132 करोड़ की आबादी वाले देश में खाद्य सुरक्षा के लिए यह स्थिति बेहद खतरनाक है।"

शोधकर्ताओं ने 'हाई रेजोल्यूशन रिमोट सेंसिंग सेटेलाइट डेटा' का उपयोग करके भारत की 22 प्रमुख नदी घाटियों के पारिस्थितिक तंत्रों के लचीलेपन का मानचित्र विकसित किया है। इस प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक पारिस्थितिक तंत्र की भूमि, वहां की नदी घाटियों और वहां की जलवायु सहित विभिन्न कारकों के जरिये पानी का दबाव सहन करने की क्षमता को मापा गया है।

अध्ययन में नासा के मॉडरेट-रेजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर (एमओडीआइएस) से प्राप्त पादप उत्पादकता और वाष्पोत्सर्जन के आंकड़ों सहित भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के वर्षा संबंधी आंकड़ों केआधार पर भी निष्कर्ष निकाले गए हैं। पारिस्थितिकीय तंत्र के बायोमास (कार्बनिक पदार्थ जिनसे ऊर्जा पैदा हो सकती है) उत्पादन की क्षमता का आकलन करने के लिए वैज्ञानिकों ने यह प्रक्रिया अपनायी है।

पारिस्थितिकीय तंत्र का संतुलन उसकी बायोमास उत्पादन की क्षमता पर निर्भर होता है, जो जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगर पेड़-पौधों द्वारा बायोमास उत्पादन करने की क्षमता कम होती है तो इससे पारिस्थितिकीय तंत्र का संतुलन बिगड़ जाता है और उसकी सूखे जैसी समस्याओं से लड़ने की क्षमता कमजोर हो जाती है।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग और पुणे स्थित भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान ने तापमान, वर्षा, गर्मी तरंगों, ग्लेशियरों, सूखा, बाढ़ और समुद्र के स्तर में वृद्धि के लिए एक समान प्रवृत्ति का अनुमान लगाया है। वैज्ञानिकों के अनुसार दक्षिण एशियाई क्षेत्र में सतह पर हवा का तापमान वर्ष 2020 तक बढ़कर 0.5-1.2 डिग्री सेल्सियस, वर्ष 2050 तक 0.88-3.16 डिग्री सेल्सियस और वर्ष 2080 तक 1.56-5.44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है।

आईआईटी-गुवाहाटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक 22 में से जिन महज छह नदी घाटियों के पारिस्थितिकीय तंत्र में सूखे को सहन करने की क्षमता पाई गई है, उनमें ब्रह्मपुत्र, सिंधु, पेन्नार, लूनी, कच्छ एवं सौराष्ट्र की पश्चिम में बहने वाली नदियां कृष्णा और कावेरी के बीच स्थित पूर्व की ओर बहने वाली नदियां शामिल हैं। गंगा के किनारे के सबसे ज्यादा आबादी वाले वाले

सूखा नहीं झेल सकता दो-तिहाई परितंत्र

तापमान बढ़ने से पेड़-पौधों द्वारा बायोमास उत्पादन करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बिगड़ जाता है और सूखे जैसी पर्यावरणीय समस्याओं से लड़ने की परितंत्र की क्षमता कमजोर हो जाती है। देश के जिन हिस्सों के पारिस्थितिक तंत्र की क्षमता जलवायु परिवर्तन के खतरों से लड़ने के लिहाज से कमजोर पायी गई है, वहां इसका सीधा असर खाद्यान्नों के उत्पादन पर पड़ सकता है। भारत जैसे सवा अरब की आबादी वाले देश की खाद्य सुरक्षा के लिए यह स्थिति खतरनाक साबित हो सकती है।

–प्रोफेसर मनीष गोयल, *शोधकर्ता-आईआईटी, गुवाहाटी*

ढूंढ़ने होंगे जलवायु अनुकूलन के रास्ते

जलवायु परिवर्तन के कारण हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों के किसान सेब की खेती छोड़ रहे हैं तो हैरानी नहीं होनी चाहिए। सेब ठंडी जलवायु की फसल है और तापमान बढ़ने के कारण अब हिमाचल के किसान कम ठंडी जलवायु में उगाए जाने वाले अनार, कीवी, टमाटर, मटर, फूलगोभी, बंदगोभी, ब्रोकोली जैसे फल और सब्जियों की खेती करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। तापमान बढ़ने से सेब उत्पादन में गिरावट होने के कारण किसानों को यह कदम उठाना पड़ रहा है।

निचले एवं मध्यम ऊंचाई (1200-1800 मीटर) वाले पहाड़ी क्षेत्रों, जैसे- कुल्लू, शिमला और मंडी जैसे जिलों में यह चलन कुछ ज्यादा ही देखने को मिल रहा है। हिमाचल के शुष्क इलाकों में बढ़ते तापमान और जल्दी बर्फ पिघलने के कारण सेब उत्पादन क्षेत्र 2200-2500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित किन्नौर जैसे इलाकों की ओर स्थानांतरित हो रहा है।

समुद्र तल से 1500-2500 मीटर की ऊंचाई पर हिमालय श्रृंखला के सेब उत्पादक क्षेत्रों में बेहतर गुणवत्ता वाले सेब की पैदावार के लिए वर्ष में 1000-1600 घंटों की ठंडक होनी चाहिए। लेकिन इन इलाकों में बढ़ते तापमान और अनियमित बर्फबारी के कारण सेब उत्पादक क्षेत्र अब ऊंचाई वाले क्षेत्रों की ओर खिसक रहा है।

सर्दियों में तापमान बढ़ने से सेब के उत्पादन के लिए आवश्यक ठंडक की अवधि कम हो रही है। कुल्लू क्षेत्र में ठंडक के घंटों में 6.385 यूनिट प्रतिवर्ष की दर से गिरावट हो रही है। इस तरह पिछले तीस वर्षों के दौरान ठंडक वाले कुल 740.8 घंटे कम हुए हैं। इसका सीधा असर सेब के आकार, उत्पादन और गुणवत्ता पर पड़ता है।

सुदूर पूर्वोत्तर राज्य मिजोरम ने इस क्षेत्र में उदाहरण पेश किया है। मौसम के बदलते पैटर्न को वहां गंभीरता से समझा गया है और स्थानीय लोगों की आजीविका तथा खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित रखने के लिए वैकल्पिक फसलों की खेती की जा रही है।

ड्रैगन फ्रूट आमतौर पर थाईलैंड में पैदा होता है। मिजोरम का तापमान बढ़ा तो थाईलैंड से ड्रैगन फ्रूट के बीज लाकर वहां इसकी पैदावार शुरू की गई है। कुछ ही सालों में इसके बेहतर परिणाम मिले हैं, किसानों को ज्यादा आमदनी हो रही है, मिजोरम का बदला मौसम अब ड्रैगन फ्रूट की पैदावार के अनुकूल हो सकता है।

इसी प्रकार की संभावनाएं हमें पंजाब व दूसरे राज्यों में भी तलाशनी होंगी। पंजाब अगर सिर्फ गेहूं और चावल की खेती पर ही निर्भर रहा तो आने वाले समय लिए यह अच्छा संकेत नहीं होगा।

वे इलाके जो खेती के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं, जलवायु परिवर्तन के लिहाज से बेहद कमजोर हैं। पश्चिमी घाट और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में जंगलों को जलवायु परिवर्तन के लिहाज से कमजोर पाया गया है।

दुनिया भर में हर किसी का पेट भरने के लिए पर्याप्त खाद्यान्न का उत्पादन होता है, फिर भी 81.5 करोड़ लोग भूखे रहते हैं।जाहिर है, जलवायु परिवर्तन आपकी भोजन की थाली को प्रभावित कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र के फूड ऐंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन (एफएओ) के अनुमान के मुताबिक विश्व की आबादी वर्ष 2050 तक नौ अरब हो जाएगी, जिसकी भूख मिटाने के लिए खाद्यान्न उत्पादन में 60 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी करनी होगी। एफएओ के अनुसार भविष्य में पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त भोजन सुनिश्चित करना विश्व की प्रमुख चुनौतियों में से एक होगी।

तापमान और वर्षा में इस वृद्धि के कारण भविष्य में भूमि और पानी की व्यवस्था में बदलाव होने की आशंका व्यक्त की जा रही है, जो कृषि उत्पादकता के लिए बेहद महत्वपूर्ण घटक माने जाते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार तापमान बढ़ने से वर्ष 2080-2100 तक

जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्यान्न उत्पादन में कमी

35 % चावल
20 % गेहूं
50 % ज्वार
13 % जई
60 % मक्का

स्रोत : जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी)

फसल उत्पादन में 10-40 प्रतिशत गिरावट होने का अनुमान है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार वर्ष 2010-2039 के बीच जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्यान्न उत्पादन में 4.5-9.0 प्रतिशत तक कमी हो सकती है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के अनुसार वर्ष 2020-2030 के दौरान तापमान में प्रति एक डिग्री की बढ़ोत्तरी होने से 40-50 लाख टन गेहूं उत्पादन कम हो सकता है। कई क्षेत्रों में जल संकट की स्थिति भयावह होने से कृषि उत्पादन पर इसका असर पड़ना तय है।

दुनिया भर में कृषि तंत्र पहले ही खेती में अधिक संसाधनो का उपयोग किए जाने के दबाव से जूझ रहा है। बढ़ती आबादी, शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय स्तर में गिरावट को इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार माना जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) ने अपनी पांचवी रिपोर्ट में बदलते जलवायु चक्र के बारे में चेतावनी देते हुए कहा है कि इस सदी के अंत तक वैश्विक तापमान में वर्ष 1990 के मुकाबले 1.4-5.8 डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है। जलवायु में बदलाव की आवृत्ति और उसकी सघनता के कारण अनियमित मानसून, बाढ़, तूफान एवं ग्लेशियरों के पिघलने का क्रम बढ़ सकता है।

आईपीसीसी के अनुसार तापमान में बढ़ोत्तरी और बाढ़ तथा सूखे की बढ़ती आवृत्ति के कारण फसलों, मत्स्य तथा वानिकी उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। जलवायु परिवर्तन के कारण चावल उत्पादन 35 प्रतिशत, गेहूं 20 प्रतिशत, ज्वार 50 प्रतिशत, जई 13 प्रतिशत और मक्के का उत्पादन 60 प्रतिशत तक कम हो सकता है।

भारत में विश्व की करीब एक चौथाई अल्प-पोषित आबादी रहती है और वर्ष 2017 के 119 देशों के वैश्विक हंगर इंडेक्स में हमारा देश 100वें स्थान पर है। कृषि एवं प्राकृतिक संसाधनों पर 50 प्रतिशत से अधिक आबादी की निर्भरता और अनुकूलन रणनीतियों के अभाव के कारण भारत जलवायु परिवर्तन के खतरे के प्रति अधिक संवेदनशील माना जा रहा है।

सूखे और ग्रीष्म लहर की दोहरी मार एक साथ पड़ने से स्थिति अधिक गंभीर हो सकती है। बंगलूरू स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान के शोधकर्ताओं ने मौसम विभाग के 1951 से 2010 तक साठ वर्षों के आंकड़ों, ग्रीष्म लहर तीव्रता सूचकांक और वर्षा सूचकांक से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पाया है कि भारत के विभिन्न हिस्सों में सूखे और ग्रीष्म लहर की घटनाएं एक साथ मिलकर दोहरी चुनौती दे रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार देश भर में एक ही समय में सूखे और ग्रीष्म लहर की घटनाएं न केवल बढ़ रही हैं, बल्कि उनका दायरा भी लगातार बढ़ रहा है।

वैज्ञानिकों के अनुसार राजस्थान एवं गुजरात समेत देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों, पूर्वोत्तर, पश्चिमी घाट एवं पूर्वी घाट के कई हिस्सों में ग्रीष्म लहर की घटनाओं में बढ़ोत्तरी स्पष्ट रूप से देखी जा रही है। पूर्वी घाट, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश समेत पश्चिमी-मध्य भारत के कई इलाकों में ग्रीष्म लहर की

कृषि प्रणाली में शामिल हों नई फसलें

जलवायु परिवर्तन के दौर में ऐसी तकनीकें विकसित किए जाने की आवश्यकता है, जो न केवल बेहतर कृषि उत्पादन दें, बल्कि लोगों की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को भी सुनिश्चित करें। शुष्क क्षेत्रों में टिकाऊ कृषि सुनिश्चित करने के लिए गर्मी के प्रति सहिष्णु किस्मों के विकास के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। पर, किसानों की आजीविका को बनाए रखने के लिए उनको कृषि प्रणाली में फल, वानिकी पौधे और विभिन्न घासों समेत बारहमासी घटक शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

-डॉ. एम.एम.रॉय, *पूर्व निदेशक,*
केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

आवृत्ति में भी वृद्धि देखी गई है। इसी के साथ सूखे से प्रभावित क्षेत्र का दायरा भी बढ़ रहा है। वर्ष 1951 से वर्ष 2010 के बीच पूर्वोत्तर भारत के मध्य क्षेत्र और देश के पश्चिमी-मध्य हिस्से में सूखे से प्रभावित क्षेत्रों की सीमा का विस्तार हुआ है।

जलवायु परिवर्तन का असर पशुपालकों पर भी पड़ रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि तापमान बढ़ने से गाय के दूध में 40 प्रतिशत और भैंस के दूध में 5-10 प्रतिशत तक गिरावट दर्ज की जा सकती है। समुद्री पारिस्थितिक तंत्र भी इससे अछूता नहीं है। जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र के भीतर प्रवाल भित्तियां रंगहीन हो रही हैं, जिसके कारण समुद्र आधारित खाद्य श्रृंखला और मछुआरों की आजीविका खतरे में पड़ सकती है।

तमिलनाडु के तुतीकोरिन स्थित सुगंती देवदासन समुद्री अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक महाराष्ट्र के सिंधदुर्ग जिले में स्थित मालवन समुद्री अभ्यारण्य की प्रवाल प्रजातियों के रंगहीन होने की प्रक्रिया का अध्ययन करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं। रंगहीन होने से प्रवाल कमजोर हो जाते हैं और भित्ति निर्माण की क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे में इन पर अन्य गैर-सहजीवी शैवाल हावी हो सकते हैं, जिसका विपरीत असर प्रवाल भित्तियों पर आश्रित समुद्री जीवों पर भी पड़ सकता है।

एफएओ के अनुसार कृषि को 'क्लाइमेट स्मार्ट' बनाना ही एकमात्र समाधान हो सकता है। 'क्लाइमेट स्मार्ट' कृषि एक समन्वित दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें कृषि उत्पादन एवं आय में बढ़ोत्तरी, जलवायु अनुकूलन और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना शामिल है। खाद्य सुरक्षा सिर्फ भोजन की उपलब्धता भर नहीं है, बल्कि इसमें कुपोषण के विभिन्न प्रकार, उत्पादकता, खाद्य उत्पादकों की आय, खाद्य उत्पादन प्रणालियों के लचीलेपन, जैव विविधता और आनुवंशिक संसाधनों के स्थायी उपयोग के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

दो एकड़ से कम भूमि वाले छोटे काश्तकारों के समूह पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की जरूरत है, जो देश के 80 प्रतिशत से अधिक किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। किसानों का यह समूह देश की कुल कृषि भूमि के करीब 44 प्रतिशत हिस्से पर खेती करता है और कुल कृषि उत्पादन में 50 प्रतिशत से अधिक योगदान इन्हीं छोटी जोत वाले किसानों का है।

जलवायु परिवर्तन के झटकों को झेलने के लिए सामुदायिक कार्यक्रमों के जरिये स्थानीय लोगों को अनुकूलन गतिविधियों से जोड़े जाने की जरूरत है। खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना पशुपालन, वानिकी और मत्स्य पालन समेत पूरे कृषि तंत्र को कुछ इस तरह रूपांतरित करने की जरूरत है, जिससे बढ़ती आबादी की भोजन जरूरतें पूरी हो सकें और किसानों की आजीविका भी बनी रहे।

आईआईटी, इंदौर से जुड़े वैज्ञानिक डॉ. मनीष कुमार के अनुसार जलवायु अनुकूलन के लिए जन-भागीदारी जरूरी है। समुदाय की जरूरतों के बारे में समझ की कमी, अनुकूलन रणनीतियों को समझने एवं अपनाने में समुदाय की अक्षमता और धन के अभाव के कारण जलवायु अनुकूलन से जुड़ी रणनीतियां अक्सर कारगर नहीं हो पातीं।

डॉ. मनीष कुमारके मुताबिक चरम स्थितियों में ही नहीं, बल्कि जल सुरक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए भी स्थानीय समुदायों को सक्षम होगा।भू-जलविज्ञानियों, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदाय के बीच तालमेल बढ़ाने से लाभ हो सकता है और प्रभावी रणनीति तैयार करने में मदद मिल सकती है। ■

(लेखक विज्ञान पत्रकार हैं)

समुद्री पारिस्थितिक तंत्र पर भी खतरा

जलवायु परिवर्तन का असर समुद्री प्रवाल भित्तियों पर भी पड़ रहा है और वे रंगहीन हो रही हैं। ऐसी स्थिति में प्रवाल रोगों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं और उनकी मृत्यु दर बढ़ सकती है। इस कारण समुद्री खाद्य श्रृंखला और उस पर आश्रित मछुआरों की आजीविका प्रभावित हो सकती है। इसलिए समय रहते तापमान को प्रभावित करने वाले मानव जनित कारकों को नियंत्रित करने के लिए वैश्विक पहल और नीतिगत सुधार की जरूरत है। प्रवालों के पुनर्जीवन के लिए मानव जनित खतरों को कम करना भी जरूरी है।

-डॉ के. दिराविया राज, *वरिष्ठ वैज्ञानिक, सुगंती देवदासन समुद्री अनुसंधान संस्थान, तुतीकोरिन, तमिलनाडु*

अनुभूति बने समाज का हिस्सा : शिवराज सिंह चौहान

अभाविप के आयाम विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा आयोजित 'गांव चले हम' सामाजिक अनुभूति के तहत कार्यकर्ताओं द्वारा गांवों में रहकर किये गये प्रत्यक्ष अनुभव को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ साझा किया किया और गांवों में होने वाले परेशानियों से उन्हें रूबरू करवाया। मुख्यमंत्री नें छात्रों को अपने गांव के अनुभव को बताया साथ ही गांव में हो रही परेशानियों का भी फीडबैक लिया एवं सरकार द्वारा की जा रही योजनाओं को शहर के विद्यार्थियों द्वारा गांव ले जाने का आह्वान किया। उन्होंने एसएफडी द्वारा चलाये जा रहे अनुभूति कार्यक्रम की प्रशंसा की और इसे हर वर्ष चलाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में 39 महाविद्यालय के छात्र सम्मिलित हुए। छात्रों ने स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करने, सरकारी सुविधाओं को गांव तक पहुंचाने की बात कही। छात्रों ने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि ग्रामीण भले ही धन से गरीब हैं लेकिन दिल से बहुत अमीर हैं। ग्राम भ्रमण के दौरान गांवों के खेल और संस्कृति को जानने का मौका मिला।

एसएफडी की प्रास्ताविक भूमिका को एसएफडी के प्रमुख सचिन दवे ने रखा। प्रास्ताविक भूमिका के दौरान श्री दवे ने कहा कि इस अभियान के द्वारा ग्रामीणों एवं शहरवासियों के बीच दूरी कम होगी और आत्मीयता का भाव बढ़ेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि

सरकार ऐसी व्यवस्था करे कि शहरवासी ग्रामीण जीवन का अनुभव ले सके। अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि आगामी समय में वे पुनः गांव जाकर ग्राम विकास में सहभागी होकर राष्ट्रीय विकास में योगदान दें। ■

ABVP demands suspension of DU's Chemistry dept HOD

ABVP staged a protest at Delhi University's North Campus demanding suspension of Chemistry department head who was allegedly involved in sexual harassment of a teacher and a student.

The students' body submitted a memorandum to the Vice Chancellor Yogesh K Tyagi and also demanded the immediate suspension of other professors who were involved in similar cases.

"An issue has been circulated in the varsity about Chemistry department HOD and his involvement in sexual harassment of a student and a teacher. There have been several such incidents but so far no speedy inquiry or action has been taken," said Mahamedhaa Nagar, an ABVP activist and Delhi University Students Union (DUSU) Secretary in the memorandum.

DUSU demands immediate suspension of the Chemistry HOD (Head Of Department) and other professors involved in such acts, Nagar said. ■

सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों से होगा अपराधमुक्त भारत

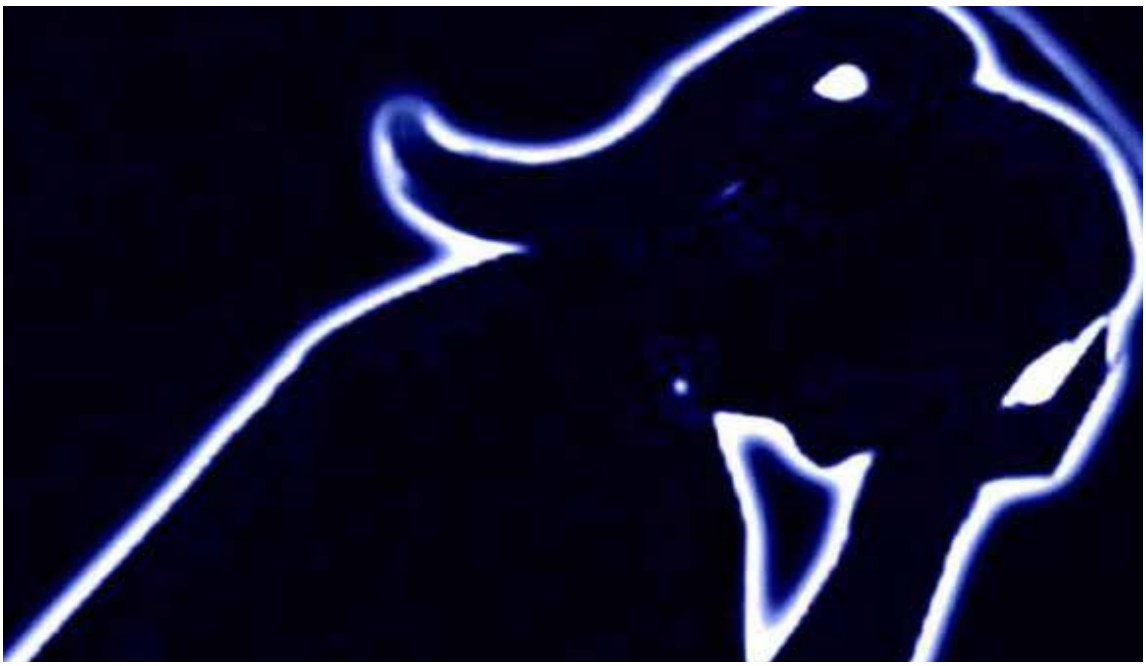

| अभिषेक रंजन |

कठुआ, उन्नाव के बहाने देश एक बार फिर आक्रोशित है। महिला सुरक्षा को लेकर नए सिरे से बहस चल रही है कि आखिर कड़े क़ानूनी प्रावधानों के बावजूद महिलाओं की अस्मत दरिंदों के हाथों लुटने का यह क्रम थमेगा कब! विशेषकर छोटी-छोटी बच्चियों के साथ जिस तरह की आपराधिक घटननाएं हो रही है, वे बेहद चिंताजनक हैं। आम जनमानस उद्वेलित है और ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सरकार से कठोर क़ानूनी दंड के प्रावधान की मांग कर रहे है। केंद्र सरकार ने भी बाल अपराध की इस प्रवृति पर अंकुश करने की नियत से पोस्को एक्ट में बदलाव कर 12 वर्ष से कम उम्र की बच्चियों के साथ दुष्कर्म के आरोपियों को मृत्युदंड देने के लिए अध्यादेश के जरिये क़ानूनी प्रावधान किये है, वही ऐसे मामलों में सुनवाई की अवधि भी सीमित कर दी है।

हर रोज ऐसी घटनायें हो रही हैं, जहां पीड़िता की कहानी सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। पीड़िता चाहे शहर की हो या गांव की, सिर्फ नाम बदलते हैं, लेकिन उनके साथ हुए अत्याचार की कहानी को जानना उतना ही कष्टदायक होता है। कुछ घटनाएं लोगों की नज़र में मीडिया व सामाजिक कार्यकर्ताओं के जरिये आती हैं तो जनमानस में काफी प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। नतीजतन जल्द कार्रवाई होती है, अपराधी पकड़े जाते है और उनके दण्डित होने की संभावनाएं अधिक हो जाती है। अफ़सोस, ऐसी घटनाएं भी कुछ दिनों के बाद मानस पटल से गायब हो जाती हैं, समाज फिर से अपनी दुनिया में खो जाता है और आस-पास होने वाली घटनाओं से वह अपरिचित बना रहता है। वहीं कई बार कुछ घटनाएं राजनीतिक रंग ले लेती हैं या फिर व्यक्ति केन्द्रित होकर रह जाती हैं। मीडिया के नेतृत्व में एक को न्याय दिलाने के लिए पूरा देश एकजुट हो जाता है। सरकारें सक्रिय हो जाती हैं। अंततः एक को मिले न्याय

से ही समस्या के समाधान हो जाने का आभास कराया जाता है। लेकिन मूल समस्या जस की तस बनी रह जाती है।

सरकार विरोधी नारे लगाते, दर्द और गुस्से से भरे जितने चेहरे जंतर मंतर, इंडिया गेट सहित देश के चौक-चौराहों ने 16 दिसंबर 2012 के बाद देखे, उतना स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत कम ही देखने को मिले होंगे। निर्भया के साथ जो कुछ भी हुआ, वह ह्रदय विदारक था। उस घटना को किसी भी तर्कों के सहारे न्यायसंगत नही ठहराया जा सकता। निर्भया केस ने देश में महिला सुरक्षा की स्थिति को लेकर एक गंभीर बहस शुरू की, जो अंततः जस्टिस जे एस वर्मा समिति के जरिये एक प्रभावी कानून की शक्ल में हमारे सामने आयी। लेकिन उस घटना के दो सालों बाद देश में बदला क्या? क्या कानून बनने से बलात्कार की घटनाएं होनी बंद हो गई? निर्भया के केस में अपराधी पकड़े गये,उन्हें दंड मिलना तय भी हो गया है, लेकिन उसी दौरान घटी बाकी घटनाओं के मामले में क्या हुआ होगा, किसी को नही पता? हम कबतक केवल एक घटना पर ही शोक जताते रहेंगे? बाकियों की सुध कौन लेगा?

> प्रोटेक्शन ऑफ़ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस (पोस्को) एक्ट तथा भारतीय दंड सहिंता की धारा 376 सहित कई अन्य धाराओं में दर्ज मामलों के आधार पर तैयार नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों की माने तो वर्ष 2016 में 38,947 बलात्कार के मामलें दर्ज हुए, इनमें से 36,859 मामलें ऐसे थे, जिसमें आरोपी पीड़ित के जान-पहचान के या फिर रिश्तेदार थे. क्या सामाजिक संबंधों को लेकर देश में कोई बहस शुरू हुई?

इन सवालों के बीच एक महत्वपूर्ण सवाल है कि महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराध की इस ह्रदयविदारक समस्या के लिए जिम्मेवार कौन है - समाज या सरकार या फिर दोनों?

प्रोटेक्शन ऑफ़ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस (पोस्को) एक्ट तथा भारतीय दंड संहिता की धारा 376 सहित कई अन्य धाराओं में दर्ज मामलों के आधार पर तैयार नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों की मानें तो वर्ष 2016 में 38,947 बलात्कार के मामले दर्ज हुए, इनमें से 36,859 मामले ऐसे थे, जिसमें आरोपी पीड़ित के जान-पहचान के या फिर रिश्तेदार थे। क्या सामाजिक संबंधों को लेकर देश में कोई बहस शुरू हुई? आखिर क्या वजह है कि अपने ही लोग अस्मत लूट रहे हैं? समाज बेटियों की सुरक्षा करने में असमर्थ हो वहां सुरक्षा की जिम्मेवारी पुलिस विभाग की हो जाती है। लेकिन पुलिस विभाग की स्थिति देखें तो यहाँ बहुत सारे पद खाली हैं। गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाली संस्था पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो के 2016 आंकड़ों की बात करें तो केवल कुल पुलिसकर्मियों में महिला पुलिस की हिस्सेदारी केवल 8 प्रतिशत है. वर्ष 2012 तक भारत में सिविल पुलिस के कुल 17,02,290 पद सृजित किए गए है, जिसपर 12,98,944 नियुक्तियां हो चुकी है। बाकी लगभग 23 प्रतिशत पद खाली हैं। 11 अप्रैल, 2017 को लोकसभा में पूछे गए एक प्रश्न के जबाब में गृह राज्य मंत्री हंसराज अहीर ने भारत में प्रति एक लाख जनसंख्या पर 137 पुलिस के जवानों की तैनाती की जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र संघ का मानना है कि यह संख्या कम से कम 220 होनी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र के मानकों पर खरा उतरने के लिए कम से कम छः लाख नियुक्तियां करनी पड़ेंगी। गृह सचिव के एक बयान की मानें तो अभी 20 हजार प्रतिवर्ष के हिसाब से पुलिस विभाग में नियुक्तियां हो रही है। यह क्रम जारी रहा तो कम से कम 40-50 साल लग जाएंगे। पुलिस विभाग की नियुक्तियों के लिए क्या कोई गंभीर प्रयास नही होने चाहिए!

इस बात पर भी विचार करने की जरुरत है कि क्या देश में कठोर कानून और मजबूत पुलिस व्यवस्था से बलात्कार की बढ़ती घटनाएं रुक जाएंगी? यह सवाल ऐसा है जिसपर हम हमेशा भावुक होकर सोचते हैं। बलात्कार की घटनाएं जब भी होती है तो हम इस तरह से प्रतिक्रिया देते है जैसे इसका एकमात्र कारण सरकार और पुलिसिया व्यवस्था में खामी है। निष्पक्ष होकर सोचें तो बलात्कार के मामलों में अकेले पुलिस को दोष देना ज्यादती होगी। आखिर पुलिस कैसे पता लगाएगी कि कौन सा व्यक्ति किस महिला के साथ कब दुष्कर्म करेगा? सामूहिक दुष्कर्म के मामले में तो थोड़ा बहुत

संभव भी है कि वह अपने मजबूत ख़ुफ़िया तंत्र की मदद से षड्यंत्र का पता लगाकार घटना को होने से रोक दे। लेकिन जहाँ दुष्कर्म का आपराधिक कृत्य किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अंजाम दिया जाता है, उसे रोकना केवल पुलिस के सहारे आसान नही है। सार्वजनिक स्थानों, कार्यालयों, चौक-चौराहे पर कैमरा लगाया जा सकता है। वहां पुलिस की तैनाती की जा सकती है। हर घर या बस, ऑटो में ऐसा किया जाना संभव है क्या? क्या बलात्कार की घटना को होने से रोकने की जिम्मेवारी सिर्फ पुलिस की है, समाज की नहीं? आज भी कई जगहों पर लोगों की आंखों के सामने सबकुछ होते रहता है, लेकिन लोग चुप रहते हैं। क्या यह समय की मांग नही है कि देश के नागरिकों को एक सामूहिक संकल्प लेकर अपनी ओर से प्रयास करना चाहिए कि हम अपनी आंखों के सामने किसी लड़की की अस्मत नहीं लुटने देंगे!

दुखद तथ्य तो यह है कि देश में बलात्कार पीड़िता व उसके परिवार को ही अलग-थलग कर दिया जाता, उन्हें सम्मान नही दिया जाता, जिस लड़की की इज्जत लुट ली गई, क्या उसे व उसके परिवार को हेय दृष्टि से देखा जाना उचित है? अफ़सोस हम इन सवालों का सामना नही करना चाहते।

यह शर्मनाक है कि नारियों की पूजा करने वाले देश में बेटियां सुरक्षित नही हैं। वैश्विक स्तर पर आंकड़ों की बात करें तो यूएन ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम की रिपोर्ट के मुताबिक बलात्कार के मामले में अमेरिका पहले स्थान पर, वहीं इंग्लैंड चौथे स्थान पर है. जब दुनिया में सबसे ज्यादा मजबूत ख़ुफ़िया तंत्र व कड़े सुरक्षा प्रबंधों के लिए जाने जानेवाले देशों का यह हाल है तो भारत में जीर्ण-शीर्ण पुलिसिया तंत्र से हम क्या अपेक्षा रख सकते हैं। एक सीमित दायरे में ही पुलिस प्रभावी हो सकती है, पुलिस के भरोसे यह समस्या कभी समाप्त नहीं होगी। क्या हम इस तथ्य को स्वीकारते हुए बलात्कार की समस्या को संस्थागत समस्या न मानकर सामाजिक समस्या मानने को तैयार हैं?

हम सचमुच में बलात्कार की समस्या से निजात पाना चाहते हैं तो इस समस्या को समग्रता में देखना पड़ेगा. जबतक ऐसा नही होगा, हम अपनी जिम्मेवारियों से कुछ दिनों के विरोध और आक्रोश व्यक्त कर इतिश्री करते रहेंगे। सिर्फ बलात्कार ही नही, महिलाओं के खिलाफ़ बाकी अपराधों की फेहरिस्त भी काफी लंबी है। महिलाओं के साथ लगातार होती घटनाओं से एक बात तो तय हो गई है कि देश में कानून व्यवस्था कम से कम महिलाओं को सुरक्षा देने में सक्षम नहीं है। ऐसा नही होता तो क़ानूनी प्रावधान होने के बाबजूद बलात्कार, छेड़खानी, क्रूरता की घटना नहीं बढ़ती। ऐसी घटनाएँ शासन की विफलता और समाज की उदासीनता का सूचक है।

फिर भारत में बलात्कारों का सिलसिला रुकेगा कैसे? सरकार की सक्रियता के साथ-साथ समाज की जागरूकता से। फिलहाल अपना स्वार्थ नही हो तो ज्यादातर लोग दूसरों की मजबूरी को समझना ही नही चाहते। समाज में दूसरो के साथ हो रहे जुल्म की फिक्र करने वाले लोग बहुत कम पड़ गए हैं। व्यवस्था से लड़ने की कोशिशें नाकाम कर दी जाती है और हम तमाशाई बने रहते हैं। पुलिस और सरकार निष्क्रिय तब होती है जब समाज कमजोर, स्वार्थी और बुजदिल बन जाता है। आवश्यकता है एकजुट होकर समाज की तरफ से पहल हो, वही सरकार सुरक्षित समाज के लिए जरुरी व्यवस्थाएं बनाये. सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों से ही अपराधमुक्त भारत की कल्पना संभव है। ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का मई 2018 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

धन हासिल करना ही सब कुछ नहीं, चरित्र निर्माण करें युवा : राजनाथ

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने लखनऊ स्थित जानकीपुरम इंजीनियरिंग कालेज के सभागार में "21वीं सदी के भारत के विकास में युवाओं की भूमिका" शीर्षक संगोष्ठी आयोजित की। इस मौके पर केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने विद्यार्थी परिषद की वार्षिक पत्रिका स्मृति मंजूषा का विमोचन किया।

गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि ज्ञान और धन हासिल करना ही सब कुछ नहीं है। इसके साथ चरित्र का होना भी जरूरी है। रावण ज्ञानी, धनवान और बलवान था लेकिन चरित्र न होने के कारण आज राम की पूजा होती है। इसलिए युवाओं को यह बात मन में बैठानी चाहिए। उन्हें जीवन मूल्यों को अपनी जिन्दगी में चरितार्थ करने की जरूरत है। राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता बेहद आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य है कि आज शिक्षा की जो व्यवस्था है, उससे हम चरित्र और एकता को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। चरित्र के साथ ज्ञान का समावेश नहीं होगा तो हम दुनिया में भारत की पताका नहीं फहरा पायेंगे। युवा भीख नहीं भविष्य के आकांक्षी बनें। मनुष्य के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज चरित्र है। अगर चरित्र नहीं है तो कुछ भी नहीं है।

गृहमंत्री ने वर्तमान राजनीति पर चिन्ता जताते हुए कहा कि आज राजनेताओं को लेकर झूठ, फरेब की धारणा बन गई है। वास्तव में जो नीति के आधार पर राज करे वही राजनीति है, जो समाज को सन्मार्ग दिखाये वही राजनीति है। युवा मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की राजनीति स्थापित करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ें। जब राम के हाथों में राजनीति गई तो भक्ति बन गई, जब श्रीकृष्ण के हाथों में गई तो युक्ति बन गई, जब महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस जैसे लोगों के हाथ में गई तो शक्ति बन गई, जब चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, खुदीराम बोस के हाथों में गई तो मुक्ति बन गई, लेकिन जब भ्रष्ट नेताओं के हाथ में गई तो सम्पत्ति और अराजक तत्वों के हाथों में जाने पर विपत्ति बन गई। इसलिए युवाओं को इस बात को समझना बेहद जरूरी है। उनकी आज की राजनीति में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है।

राजनाथ ने कहा कि दुनिया में जो भी महान नेता हुए वह सेना या भौगोलिक क्षेत्र के कारण बने, लेकिन भारत में त्याग करने वाले मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, स्वामी विवेकानन्द को पहचान मिली। भारत में धन होना महानता नहीं बल्कि त्याग का होना इसका पैमाना है। सुख की प्राप्ति बड़े मन से होती है। बड़े मन के लोग ही विश्व के मन पर आसीन होते हैं। छोटे मन से अच्छे समाज का निर्माण नहीं हो सकता। वहीं उन्होंने कहा कि मतभेद होना तो जरूरी है लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। वहीं उन्होंने जिस सभागार में कार्यक्रम हो रहा था, उसका नामकरण करते हुए राम प्रसाद बिस्मिल सभागार नाम दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनय पाठक ने की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से फैजाबाद नगर निगम के महापौर मेयर ऋषिकेश उपाध्याय, स्वागत अध्यक्ष ओपी श्रीवास्तव, प्रान्त संगठन मंत्री सत्यभान सिंह, संगठन मंत्री अभिलाष मिश्रा, पवन चौहान, अंशुल श्रीवास्तव इत्यादि उपस्थित थे। ■

Aspirational Districts to build foundation of New Bharat

Unnat Pandit

Bharat's growth rate is projected to accelerate to 7.2 per cent in 2018 and 7.4 per cent in 2019, the UN said, describing the outlook for the country as "largely positive", secondly has made considerable progress on various developmental parameters, however, significant inter- and intra-State disparities persist on various fronts. Stark differences exist between districts in the country.A need of vital step to bring the aspiring district to its unprecedented scale and ambition with one mission of allowing development of districts quickly and effectively who leg behind in 'social justice' and the journey of development till date since independence.Hon'ble PM often quotes that relative backwardness of some regions is an injustice to the people of those regions. In Bharat, the phrase 'social justice' is loaded with political meaning as political parties, especially those from 'Janata Parivar', have used the plank to rally backward castes and other weaker sections of society around them. In that context, for development of more than 100 backward districts, is focus keeping with the vision of Dr. Ambedkar, who worked for the uplifting the underprivileged. PM often emphasised the need to be systematic arrangements to involve people, giving the example of the Swachh Bharat Abhiyan and the need to recognize and channelize the aspirations of the people.

Hon'ble PM in January 2018 launched a program for, the 'Transformation of

Aspirational Districts (AD)' with an aim to quickly and effectively transform some of the most underdeveloped districts of the country. The broad contours of the programme are in 3 'C' - Convergence (of Central & State Schemes), Collaboration (of Central, State level 'Prabhari' Officers & District Collectors), and Competition among districts driven by a Mass Movement or a Jan Andolan to work for positive frame of mind. No specific financial allocation has been made for this programme. Instead, the intent is to converge the multiple schemes of the Central and State governments and channelise the funds for this programme. Investing additional resources is often not the solution. It is about spending the money more smartly for achieving better outcomes.

The States as the main drivers of ADP is offering to focus on the strength of each district, identify low-hanging fruits for immediate improvement, measure progress, and rank districts. To enable optimum utilization of AD potential, the program focusses closely on improving people's ability to participate fully in the burgeoning economy. Health & Nutrition, Education, Agriculture & Water Resources, Financial Inclusion & Skill Development, and Basic Infrastructure are this programme's core areas of focus.If all children go to schools and all households get electricity and better livelihood, then it would be a step towards social justice. The Government is committed to raising the living standards of its citizens and ensuring inclusive growth for all – SabkaSaath, SabkaVikas. This is just beginning centre is all ensuring that all energies are to channelize for upliftment of ADs involving corporates and various other ministries in the journey of their participation to ADP. Central ministries have also adopted few districts for channelizing their energy in the upliftment of adopted Ads.

The ADP initiative by Centre, shifts the focus away from output and draws attention to socio-economic outcomes. The NITI Aayog being nodal agency to coordinate this initiative has launched the baseline ranking for ADs(http://niti.gov.in/content/aspirational-districts-baseline-ranking-map) based upon the published data of 49 indicators (81 data points) across five developmental areas of Health and Nutrition, Education, Agriculture and Water Resources, Financial Inclusion and Skill Development, and Basic Infrastructure. The dashboard - 'Champions of Change' consists of real-time data collection and monitoring is now open for public viewing too which facilitate District Collectors of all the ADs to input the latest available data of their respective districts. The entered data to the dashboard shall generate MIS (Management Information System) reports. The objective behind the monitoring mechanism is to create competition at the State, District and even the block level. Such initiatives are going to bridge the 'distance to frontier' which is key to ensuring the States' prosperity and the Nation's progress. This initiative is going to have a healthy competition and cooperative and competitive federalism between centre and state, down to the district level with AD programme through real-time monitoring and proactive course corrections, reinforces the mechanisms. ■

(Author is head of Atal Innovation Mission, NITI AYOG)

छात्रों के हित के लिए कृतसंकल्प है एआईसीटीई : अनिल सहस्त्रबुद्धे

जम्मू – कश्मीर में आयोजित हुआ टेक्नोत्सव, सैकड़ों तकनीकी छात्रों ने लिया भाग

अभाविप जम्मू - कश्मीर प्रांत द्वारा तकनीकी छात्रों में कार्य विस्तार एवं तकनीकी पढ़ाई को बढ़ावा देने हेतु टेक्नोत्सव का आयोजन किया गया। टेक्नोत्सव में आये छात्रों ने खुद से बनाये मॉडल प्रस्तुत किये और पेपर प्रजेंटेशन में भाग लिया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे, विशिष्ट अतिथि अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास, क्षेत्रीय संगठन मंत्री नवीन शर्मा, केन्द्रीय विश्वविद्यालय जम्मू के उपकुलपति प्रो. अशोक ऐमा उपस्थित थे।

उदघाटन सत्र को संबोधित करते हुए एआईसीटीई के चेयरमैन अनिल सहस्त्रबुद्धे ने एआईसीटीई के द्वारा छात्रों के हित के लिए शुरू किये गये योजनाओं और स्वयं पोर्टल के बारे में बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एआईसीटीई छात्रों के लिए जमीनी कार्य को बढ़ाने का प्रयास कर रही है, ताकि छात्रों को नए - नए उपकरणों का ज्यादा से ज्यादा ज्ञान हासिल हो सके। महिला स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए एआईसीटीई ने कनाडा सरकार के साथ मिलकर एक एमओयू हस्ताक्षर किये हैं जिसमें भारत से छात्राओं को कनाडा भेजा जाएगा। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण को लेकर भी अपनी बात रखी। वहीं विशिष्ट अतिथि अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने छात्रों के उत्साह को बढ़ाया और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना दी।

समानांतर सत्र में विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेज से आए हुए छात्रों ने 27 मॉडल और छह पेपर प्रस्तुत किये। विभिन्न महाविद्यालय से आये हुए प्राध्यापकों को पर्यवेक्षक बनाया गया। पर्यवेक्षकों ने प्रजेंटेशन का आकलन किया। इसके बाद पूणे की केपीआईटी स्पार्कल कंपनी द्वारा भी एक पीपीटी हुआ जिसमें उन्होंने छात्रों को केपीआईटी स्पार्कल कंटेट के बारे में जानकारी दी।

समापन सत्र के दौरान अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री नवीन शर्मा, सलाहकार समिति के चेयरमैन नरेश पाधा, स्वागत समिति मंत्री एवं वाईसीईटी के निर्देशक प्रो. अरविंद, टेक्नोत्सव कार्यक्रम के सह संयोजक दीपांशु आदि ने छात्रों को संबोधित किया। संबोधन के पश्चात मॉडल प्रदर्शन और पेपर प्रेजेंटेशन के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान कला प्रतिस्पर्धा का भी आयोजन हुआ जिसमें प्रतिभागियों ने नृत्य, गायन, नाट्य, सांस्कृतिक फैशन शो आदि में हिस्सा लिया। प्रथम तीन स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जम्मू कश्मीर के प्रदेश सिंह मंत्री जीत सिंह के मुताबिक कार्यक्रम में कुल 526 छात्रों ने भाग लिया। ■

नोटबन्दी से पारदर्शी हुई है आर्थिक व्यवस्था

| हर्षवर्द्धन त्रिपाठी |

जीएसटी से सरकार के खजाने में एक लाख करोड़ रुपए आ गए हैं। हालांकि, कमाल की बात यह है कि, जीएसटी के सफल होने की बुनियाद की बात ही अब कोई नहीं कर रहा है। नोटबन्दी पर अब केंद्र सरकार भी बात नहीं करना चाहती है। इसकी सीधी सी वजह यही है कि, केंद्र सरकार सीधे तौर पर यह नहीं बता पा रही है कि, आखिर नोटबन्दी से कितना बड़ा फायदा हुआ है। उस पर फिर से बाजार में नकद का प्रचलन नोटबन्दी के पहले के स्तर पर पहुंचने से नोटबन्दी के फायदे गिनाना राजनीतिक तौर पर बहुत फायदे का सौदा भी नहीं दिखता है। 2019 के आम चुनावों में अब इतना कम समय बचा है कि, किसी भी ऐसे मुद्दे पर सरकार बात नहीं करना चाहती है, जिसमें जरा सी गलती होने पर उसका भावनात्मक फायदा विपक्ष उठा सके। लेकिन, क्या सचमुच नोटबन्दी बिना किसी खास परिणाम के झेली जाने वाली पीड़ा थी। इसका जवाब मुझे ना में दिखता है। और, मुझे जब इसका जवाब ना में दिखता है तो, उसके पीछे बड़ी वजह केंद्र सरकार की ओर से अलग-अलग समय पर जारी किए जाने वाले आंकड़े ही हैं। केंद्र सरकार के इन्हीं आंकड़ों की बुनियाद पर मुझे लगता है कि, नोटबन्दी देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए उठाया गया बेहद जरूरी कदम था।

नोटबन्दी से सबसे महत्वपूर्ण परिणाम आने की उम्मीद यही थी कि काले धन पर रोक लगेगी और साथ ही देश आर्थिक पारदर्शिता की ओर बढ़ेगा। नोटबन्दी का सबसे बड़ा नुकसान यही था कि, देश की अर्थव्यवस्था में काले धन पर रोक लगने से उससे चलने वाली अर्थव्यवस्था थमेगी और उसका दुष्परिणाम अर्थव्यवस्था की तरक्की की रफ्तार में कमी के साथ रोजगार के मौके भी कम होंगे। यह दोनों दुष्परिणाम साफ तौर पर देखने को मिले। लेकिन, अब जिस तरह से सरकार के और दुनिया की बड़ी एजेंसियों के आंकड़े आ रहे हैं, उससे साफ है कि, अर्थव्यवस्था की तरक्की की रफ्तार फिर से पटरी पर आ गई है और साथ ही रोजगार के मौके भी बेहतर हो रहे हैं।

नोटबन्दी से रियल एस्टेट में मन्दी आ गई। नोटबन्दी से छोटे-मंझोले उद्योग बन्द हो गए और नोटबन्दी से नौकरियां खत्म हो गईं। इसके अलावा नोटबन्दी के बावजूद कैशलेस व्यवस्था या फिर काले धन पर रोक नहीं लग सकी। इन पर एक-एक करके बात की जानी चाहिए। सबसे बड़ी बात यही कही जा रही थी कि, पहले से ही मन्दी की मार से जूझ रहे रियल एस्टेट सेक्टर को नोटबन्दी ने बुरी तरह तोड़ दिया। इस क्षेत्र में आई मन्दी की मार बैंकों, बिल्डरों, ग्राहकों के साथ मजदूरों पर जमकर पड़ी। यह बात सही है कि, नोटबन्दी से रियल एस्टेट क्षेत्र को तगड़ी चोट पड़ी है। लेकिन, यह आधा सच है। पूरा सच यही है कि, दरअसल नोटबन्दी होने से पहले ही इस क्षेत्र में तगड़ी मन्दी थी लेकिन, काले धन की अर्थव्यवस्था से बिल्डरों की अर्थव्यवस्था दुरुस्त थी। इसका अन्दाजा इसी से लगता है कि, सिर्फ दिल्ली एनसीआर में नवम्बर 2016 से पहले आम्रपाली, जेपी, सुपरटेक और दूसरे कई छोटे बिल्डरों के 2 दर्जन से ज्यादा प्रोजेक्ट सालों से लटके पड़े थे। मोटे अनुमान के मुताबिक, करीब डेढ़ लाख लोग अपने घर की आस में ईएमआई भर रहे थे। काले धन की अर्थव्यवस्था पर तगड़ी चोट लगी तो, बिल्डरों ने खुद को दिवालिया

घोषित कर दिया। हालांकि, ग्राहकों के हितों पर लगी इस चोट में राज्य सरकारों की बेहद खराब भूमिका रही। लेकिन, सच यही है कि, नोटबन्दी ने उस गम्भीर घाव को सामने ला दिया, जिसके इलाज की सख्त जरूरत थी। इलाज नोटबन्दी ही थी।

उस इलाज के बाद रियल एस्टेट क्षेत्र से ही शुरुआत करते हैं। ताजा आंकड़े बता रहे हैं कि, रियल एस्टेट क्षेत्र में प्राइवेट इक्विटी निवेश 15 प्रतिशत बढ़ा है। पहली तिमाही में 165 अरब रुपए से ज्यादा का निवेश आया है। पिछले 11 सालों की पहली तिमाही में सबसे ज्यादा है। कुशमैन एंड वेकफील्ड की रिपोर्ट इसे और साफ करती है। रिपोर्ट के मुताबिक, निवेश बढ़ने का सीधा सा मतलब है कि, भारतीय रियल एस्टेट बाजार संस्थागत निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। खुद के इस्तेमाल के लिए घर खरीदने वालों की अच्छी मांग से कम कीमत वाले घरों की मांग तेजी से बढ़ी है। रिपोर्ट बताती है कि, रियल एस्टेट के आकर्षक होने के पीछे बड़ी वजहें औद्योगिक और वेयरहाउसिंग क्षेत्र में तेजी और इस तेजी को मजबूती देने वाले आर्थिक सुधार- जीएसटी, लॉजिस्टिक्स को बुनियादी क्षेत्र का दर्जा, ई कॉमर्स मार्केटप्लेस में 100 प्रतिशत विदेशी निवेश।

नोटबन्दी से लोगों की नकदी की आदत कम करने के अलावा एक और जरूरी लक्ष्य हासिल करना था कि, ज्यादा से ज्यादा कर दें। यानी, जिनकी कमाई का सरकार को पता हो और उस पर तय रकम कर के रूप में सरकारी खजाने में आए। इस पैमाने पर सरकार को बड़ी सफलता मिली है। साल 2017-18 में प्रत्यक्ष कर के तौर पर सरकारी खजाने में डेढ़ लाख करोड़ रुपए अतिरिक्त कर के तौर पर आए। इस साल में रिकॉर्ड एक करोड़ से ज्यादा नए करदाता जुड़े। पिछले 2 साल में नए करदाताओं की संख्या 62 प्रतिशत बढ़ी है। 2015-16 में 66 लाख नए करदाता जुड़े थे और 2017-18 में एक करोड़ सात लाख नए करदाता जुड़े हैं। इसके अलावा सरकार की नजर उन 65 लाख लोगों पर भी है, जिन्होंने नोटबन्दी के दौरान पुराने 500 और 1000 के नोट जमकर जमा किए लेकिन, टैक्स रिटर्न नहीं भरा है। 10 लाख रुपए से ज्यादा के पुराने नोट जमा करने वाले 3 लाख से ज्यादा लोगों में 2 लाख 10 हजार लोगों ने 6500 करोड़ रुपए का टैक्स चुकाया है।

नोटबन्दी से आर्थिक पारदर्शिता के पैमाने पर बड़ी सफलता मिली है। कर चोरी के बड़े मामलों में सरकार ने बड़ी कार्रवाई की है। 2013-14 में कर चोरी के 1385 मामलों में शिकायत दर्ज हुई और 641 मामले अदालत तक गए, इसमें से 41 मामलों में सजा सुनाई गई। नोटबन्दी के बाद, 2016-17 में कर चोरी के 2350 मामलों में शिकायत दर्ज हुई और 1252 मामले अदालत तक गए, इसमें से 16 मामलों में ही सजा हो सकी। लेकिन, 2017-18 में कर चोरी की 7671 शिकायतें दर्ज हुईं और 4524 मामलों में सरकार अदालत तक गई। 75 मामलों में सजा भी सुनाई गई।

जॉबलेस ग्रोथ की बात पहले से ही चली आ रही थी लेकिन, नोटबन्दी के बाद तो जैसे देश में सब बेरोजगार हो गए हैं, इस तरह की ध्वनि आने लगी। ईपीएफओ के ताजा आंकड़े रोजगार विहीन तरक्की के सिद्धान्त को भी ध्वस्त करते दिखते हैं। आकड़े बता रहे हैं कि, संगठित क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2018 में कम से कम 55 लाख रोजगार मिला है, वित्तीय वर्ष 2017 में भी 45 लाख से ज्यादा रोजगार मिला है। रोजगार के ये आंकड़े आईआईएम बैंगलुरू के प्रोफेसर पुलक घोष और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सौम्यकान्ति घोष का विश्लेषण हैं। इन लोगों ने श्रम मंत्रालय के आंकड़ों से हटकर अलग-अलग क्षेत्रों में होने वाली गतिविधियों के आधार पर ये आंकड़े पेश किए हैं।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने साल 2018-19 के लिए सात दशमलव चार प्रतिशत की तरक्की की रफ्तार का अनुमान लगाया है। हालांकि, डॉएश बैंक का ताजा अनुमान, साल 2018-19 के लिए सात दशमलव पांच प्रतिशत की तरक्की का अनुमान बता रहा है। रिपोर्ट कह रही है कि, भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी का चक्र साफ नजर आ रहा है। माइक्रोसॉफ्ट के एक अनुमान के मुताबिक, भारत की जीडीपी में अगले तीन सालों में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की वजह से 154 बिलियन डॉलर जुड़ने का अनुमान है। रिपोर्ट कह रही है कि, अगले चार सालों में देश की अर्थव्यवस्था का 60 प्रतिशत किसी न किसी रूप में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के जरिए जुड़ा होगा। इसी डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन को मजबूती से अपने पक्ष में करने के लिए नोटबन्दी देश की बड़ी जरूरत थी। और, उसका असर आर्थिक पारदर्शिता के तौर पर नजर आ रहा है। भले ही सरकार राजनीतिक नुकसान के डर से अब नोटबन्दी का जिक्र तक करने से डर रही है। ■

(लेखक आर्थिक पत्रकार हैं)

डीयू प्रशासन के खिलाफ अभाविप का प्रदर्शन

दिल्ली विश्वविद्यालय(डीयू) में छात्रावास की कमी, नियमित कक्षा न होना, वाटर कूलर की कमी, सार्वजनिक शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) ने विश्वविद्यालय प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। अभाविप के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक साकेत बहुगुणा ने आरोप लगाया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रा. योगेश त्यागी का आम छात्रों से न मिलना बिल्कुल गैर जिम्मेदाराना रवैया है, यह छात्रों के लिया अहितकारी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विभागों तथा महाविद्यालयों में सामने आ रहीं यौन शोषण की घटनाएं चिंतित करने वाली है, प्रशासन को इन घटनाओं की पीड़िताओं को न्याय दिलाने के साथ - साथ भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों, इसके लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए।

प्रदर्शन में पहुंचे छात्रों को संबोधित करते हुए प्रदेश मंत्री भरत खटाना ने कहा कि विश्वविद्यालय को छात्रों

के हित में आवश्यक कदम उठाने होंगे, जिससे शैक्षणिक गतिविधियां सुचारु रूप से चल सकें। साथ ही अन्य सुविधाओं जैसे पानी, शौचालय व सार्वजनिक परिवहन की उपलब्धता प्रशासन सुनिश्चित करें। इस दौरान उन्होंने नये महाविद्यालयों के निर्माण, हर महाविद्यालय में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन लगाए जाने, नियमित कक्षा का आयोजन करने, शौचालय की कमी को दूर करने समेत कई मांगों को प्रशासन के समक्ष रखा। खटाना ने कहा कि अगर हमारी मांगे नहीं मानी गई तो हम फिर से आंदोलन करेंगे। ■

बी.आर.ए. विश्वविद्यालय में अभाविप की शानदार जीत

भीम राव आंबेडकर विश्वविद्यालय(बी. आर.ए.यू), मुजफ्फरपुर छात्रसंघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) ने शानदार जीत हासिल की है। लगभग 35 वर्षों बाद संपन्न छात्रसंघ चुनाव मे विद्यार्थी परिषद् के समर्थित प्रत्याशियों ने सभी सीटो पर जीत दर्ज की है। जानकारी के मुताबिक विश्वविद्यालय पैनल के पांचों पदों अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महासचिव, संयुक्त सचिव और कोषाध्यक्ष पर क्रमशः बंसत कुमार, राजन कुमार, स्वर्णिम चौहान,जाहन्वी शेखर और शिवराज ने जीत हासिल की है। अध्यक्ष पद के प्रत्याशी बंसत कुमार को कुल 100 वोट तो उनके प्रतिद्वंदी को मात्र 18 वोट हासिल हुआ, वहीं उपाध्यक्ष पद पर कोई उम्मीदवार न होने के कारण राजन कुमार निर्विरोध निर्वाचित हुए, अगर महासचिव पद की बात करें तो यहां पर भी प्रतिद्वंदी उम्मीदवार को मुंह की खानी पड़ी, चुनाव में स्वर्णिम चौहान को जहां 90 मत मिले वहीं पर प्रतिद्वंदी को मात्र 29 मत प्राप्त हुए। संयुक्त सचिव के लिए जाहन्वी शेखर निर्विरोध निर्वाचित हुई हैं। कोषाध्यक्ष पद पर भी अभाविप प्रत्याशी शिवराज ने एकतरफा जीत हासिल की है। बता दें कि इससे पहले पटना विश्वविद्यालय, मिथिला विश्वविद्यालय, टीबीयू व बिहार के अन्य विश्वविद्यालयों में भी अभाविप जीत हुई है। ■

प्रतिभावान छात्रों के लिए सुनहरा अवसर

।अजीत कुमार सिंह।

'प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती" - अर्थात प्रतिभाशाली इंसान किसी का मुंह देखने के बजाय अपने पुरुषार्थ से अपनी मंजिल तक खुद सफर करते हैं। ऐसे लोग अभावों की जंजीर को तोड़कर सफलता के सोपान को हासिल करते हैं, जिसका ताजातरीन उदाहरण है महान वैज्ञानिक व पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, जिन्होंने आर्थिक बाध्यता होने के बावजूद न केवल अपना लक्ष्य हासिल किया बल्कि देश के लिए अनेक मिसाइलों का अविष्कार किया। बाद में भारत के राष्ट्रपति भी बने और अपने जीवन के अंतिम क्षण तक राष्ट्र के उत्थान के लिए प्रयासरत रहे। अक्सर देखा जाता है कि आर्थिक परेशानियों का रोना वही रोते हैं जिन्हें खुद पर भरोसा नहीं है या फिर जानकारी का अभाव है। दसअसल जानकारी के अभाव में कई बार छात्र, सरकारी योजनाओं एवं छात्रवृत्ति का लाभ नहीं उठा पाते हैं। जबकि भारत सरकार के द्वारा हर साल 82,000 छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति

निर्धन व प्रतिभाशाली छात्रों के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृति योजना की शुरूआत की गई थी जिसका उद्देश्य ग्यारहवीं से लेकर स्नातकोत्तर तक सरकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़नेवाले प्रतिभाशाली छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान करना था। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) में इसे समाप्त कर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के लिए एक नई केन्द्र क्षेत्र योजना की शुरूआत की गई। इस योजना का उद्देश्य गरीब परिवारों के प्रतिभाशाली छात्रों को अपने उच्चतर अध्ययन को जारी रखने के लिए दिन - प्रतिदिन के व्यय के भाग को पूरा करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह छात्रवृति वरिष्ठ माध्यमिक परीक्षा परिणाम के आधार पर दी जाती है। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों, जैसे - चिकित्सा, इंजीनियरिंग इत्यादि के लिए प्रतिवर्ष 82, 000 नई छात्रवृत्ति दी जाती हैं, जिसमें 41,000 छात्रों के लिए जबकि शेष 41,000 छात्राओं को दी जाती हैं।

छात्रवृत्तियों की कुल संख्या को राज्य बोर्डों के बीच राज्य की 18-25 वर्ष के आयु समूह की आबादी में जनसंख्या के आधार पर, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) और भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद (सीआईएससीई) के हिस्से को अलग करने के पश्चात देश में विभिन्न बोर्डों से पास होने वाले छात्रों की संख्या के आधार पर विभाजित किया जाता है। बोर्डों को आवंटित छात्रवृत्तियों की संख्या विज्ञान, वाणिज्य और मानविकी विषयों के बोर्ड में पास होने वाले छात्रों को 3:2:1 के अनुपात में विभाजित किया जाता है। विशेष बोर्ड परीक्षा के लिए संबद्ध विषय में सफल रहने वाले बारहवीं पद्धति(10+2,पैटर्न) या समकक्ष कक्षा बारहवीं मान्यता प्राप्त शैक्षिक संस्थालओं में नियमित पढ़ाई करने वाले (पत्राचार या दूरस्थ शिक्षा पद्धति से नहीं) वे छात्र जो किसी अन्य छात्रवृत्ति योजना का लाभ

न ले रहे हों और जिनकी पारिवारिक आय 6 लाख से कम है, इस योजना के अंतर्गत विचार किए जाने के पात्र हैं। यह 'सामान्य' और 'आरक्षित' सभी वर्गों के छात्रों पर लागू है।

छात्रवृत्ति की दर कॉलेज और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों की प्रथम तीन वर्षों के लिए स्नोतक स्तर पर 1000/- रूपए और स्नात्कोत्तर स्तर पर 2000/- रूपए प्रतिमाह है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पढ़ाई करने वाले छात्रों को चौथे और पांचवें वर्ष में 2000/- रूपए प्रतिमाह मिलेंगे। छात्रवृत्तियां एक शैक्षणिक वर्ष में 10 महीनों के लिए दी जाएगी। यह कड़े मानदंड के आधार पर वार्षिक नवीकरण के अधिन है। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की केन्द्रक क्षेत्र योजना प्रत्यक्ष अंतरण लाभ (डीबीटी) के अंतर्गत शामिल होती है। भारत सरकार के प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रवृत्तियां लाभभोगियों के बैंक खाते में सीधे ही जमा की जाती हैं।

अधिक जानकारी के लिए - http://www.scholarships.gov.in/

हिन्दी में मैट्रिक बाद अध्ययनों के लिए गैर–हिन्दी भाषी राज्यों से छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजना

इस योजना का उद्देश्य गैर-हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और राज्य सरकारों को शिक्षण और अन्य पदों जिनमें हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है उपयुक्त कार्मिकों को उपलब्ध करना है। योजना को 2004-05 में संशोधित किया गया था। संशोधित योजना के अधीन शिक्षा बोर्ड या विश्वविद्यालय या स्वैच्छिक हिन्दी संगठन द्वारा आयोजित ''अगली नीचे की परीक्षाओं के परिणामों के आधार पर हिन्दी में एक विषय के अध्ययन के लिए शिक्षा के मान्यता प्राप्त पूर्णकालिक पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षा मैट्रिक बाद से पीएचडी स्तर पर अध्ययन करने वाले प्रतिभाशाली छात्रों को हिन्दी में अध्ययन के लिए 2500 छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। छात्रवृत्ति की दर 300 रूपए से 1000 रूपए प्रतिमाह है जो पाठ्यक्रम/अध्ययन के चरण पर निर्भर है। ये योजना राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है।

अधिक जानकारी के लिए - http://www.aicte-jk-scholarship-gov.in/
http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/NHSG.pdf

> अक्सर देखा जाता है कि आर्थिक परेशानियों का रोना वही रोते हैं जिन्हें खुद पर भरोसा नहीं है या फिर जानकारी का अभाव है। दसअसल जानकारी के अभाव में कई बार छात्र, सरकारी योजनाओं एवं छात्रवृति का लाभ नहीं उठा पाते हैं। जबकि भारत सरकार के द्वारा हर साल 81,000 छात्रों को छात्रवृति प्रदान की जाती है।

जम्मू/ – कश्मीर के युवाओं के लिए विशेष छात्रवृत्ति योजना

जम्मू - कश्मीर के युवाओं को देश के साथ मुख्यधारा में जोड़ने एवं उन्हें आगे बढ़ाने के लिए वर्ष 2010 में प्रधानमंत्री द्वारा जम्मू और कश्मीर में रोजगार के अवसर बढ़ाने के संदर्भ में और सार्वजनिक और निजी क्षेत्र को शामिल करते हुए रोजगार हेतु योजना तैयार करने के लिए एक विशेषज्ञ समूह स्थापित किया गया था। विशेषज्ञ समूह की महत्वपूर्ण सिफारिशों में से एक सिफारिश थी अगले पांच वर्षों में प्रतिवर्ष 5000 छात्रवृत्तियां प्रदान करना ताकि पढ़ाई करने वाले जम्मू और कश्मीर राज्य के युवा जम्मू और कश्मीर राज्य के बाहर अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित हों। इस पहल के लिए अगले पांच वर्षों में 1200 करोड़ रूपए के परिव्यय की सिफारिश की गई थी। यह योजना 2011-12 से कार्यान्वित की जा रही है। योजना के अंतर्गत जम्मू और कश्मीर से संबंधित छात्र जिन्होंने जम्मू और कश्मीर बोर्ड या केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से संबंधित स्कूलों के माध्यम से जो जम्मू और कश्मीर में स्थित हैं और जो जम्मू और कश्मीर राज्य के बाहर सामान्यत डिग्री पाठ्यक्रम, इंजीनियरी और चिकित्साह का अध्ययन कर रहे हैं, छात्रवृत्ति के लिए पात्र हैं बशर्ते उनके अभिभावकों की आय प्रतिवर्ष 6 लाख से कम हो।

योजना का उद्देश्य् शिक्षण शुल्क, छात्रावास शुल्क,

पुस्तकों की लागत और छात्रों के अन्य प्रासंगिक प्रभारों का भुगतान करना है। हर वर्ष 5000 नई छात्रवृत्तियां उपलब्ध हैं जिनमें से 4500 छात्रवृत्तियां सामान्य डिग्री पाठ्यक्रमों, 250 इंजीनियरिंग के लिए और 250 चिकित्सा अध्ययनों के लिए हैं। योजना का कार्यान्वयन अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के वेब पोर्टल (http://www.aicte-india.org/JnKadmissions.php) के माध्यम से किया जा रहा है।

विदेश छात्रवृत्ति योजना

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग सांस्कृतिक/शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत बाहरी देशों द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति/अध्येतावृत्ति अवार्ड की सुविधा उपलब्ध कराता है। विषय क्षेत्र सामान्यतः उन्हीं विषय क्षेत्रों से लिए जाते हैं जिनके लिए प्रदाता देश के पास सुविधाएं हैं और साथ ही राष्ट्रीय आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाता है। मंत्रालय द्वारा कोई भी आवेदन फार्म उपलब्ध नहीं कराया जाता है। विज्ञापन डीएवीपी द्वारा प्रकाशित किए जाते हैं। प्रस्ताव रोजगार और बेरोजगार दोनों उम्मीदवारों के लिए होते हैं। रोजगार उम्मीदवारों को अपने नियोक्ता से प्राप्त 'अनापत्ति प्रमाण-पत्र' के साथ आवेदन प्रस्तुत करना आवश्यक है। छात्रवृत्तियां/अध्येतावृत्तियां मेधा के आधार पर प्रदान की जाती हैं। चयन विषय विशेषज्ञों से युक्त चयन समिति द्वारा किया जाता है। अधिकांश छात्रवृत्तियां स्नातकोत्तर और डॉक्टरल अध्ययन के लिए दी जाती हैं। छात्रवृत्ति प्रदान करने के संबंध में निर्णय अंतिम रूप से प्रदाता देश पर निर्भर करता है। उम्मीदवार को उस देश जिसके लिए छात्रवृत्ति आवेदन प्रस्तुत किया जा रहा है, का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। इस समय भारत के लिए राष्ट्रमंडल छात्रवृत्ति - (यूके), चीन, कोरिया, इजराइल, जापान, बेल्जियम, इटली, मैक्सिको, टर्की, आगाता हरीसन मेमोरियल फैलोशिप आदि देशों के द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जार रही।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधीन दी जाने वाली छात्रवृत्ति –

Name of the Scheme

1. Emeritus Fellowship.
2. Dr. S. Radharkrishnan Post Doctoral Fellowship In Humanities And Social Sciences
3. Post Doctoral Fellowship to Women Candidates
4. Post Doctoral Fellowship to SC/ST Candidates
5. Swami Vivekananda Single Girl Child Scholarship for Research in Social Sciences
6. Rajiv Gandhi National Fellowship for SC/ST Candidate
7. Rajiv Gandhi National Fellowship for Students with Disabilities
8. Maulana Azad National Fellowship For Minority Students
9. National Fellowship for OBC Candidate
10. Post-Graduate Indira Gandhi Scholarship for Single Girl Child
11. Post-Graduate Merit Scholarship for University Rank Holder
12. Post Graduate Scholarships for Professional Courses for SC/ST Candidates
13. "Ishan Uday" for North Eastern Region
14. Research Awards for the Teachers
15. Raman Fellowship for Post Doctoral Research for Indian Scholars in USA
16. Junior Research Fellowship in Engineering & Technology
17. Major Research Project (MRP)
18. Special Assitance Programme (SAP)

अन्य सरकारी/गैर सरकारी एवं संस्थागत छात्रवृत्ति योजना

Meri Pehchaan Scholarship Competition, Lalit Kala Akademi Scholarship 2018-19, Dr.Devangana Desai Endowment Scholarships, Jawaharlal Nehru Memorial Fund Scholarships, Venkat Panchapakesan Memorial Scholarship, Trust Fund Scholarship 2017-2018, Sashakt Scholarship By Dr Reddy's Foundation, Sitaram Jindal Scholarship Scheme 2018, Sima Khatib Scholarships - Medley Pharma Scholarship, Sima Khatib Scholarships - Medley Pharma Scholarship, Endeavour Awards - Round 2019 Endeavour Scholarships and Fellowships, European School of Management and Technology Scholarship, INSEAD L'Oreal Scholarship, CCB Welfare And Scholarship Scheme. ■

राष्ट्रमंडल खेलः 'सोने' से चमकी भारतीय प्रतिभा

| आशुतोष मिश्रा |

राष्ट्रमंडल खेल-2018 में भारतीय खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन ने हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। युवा जोश और अनुभव के तालमेल से सजे भारतीय दल ने इस बार विदेशी धरती पर ज्यादा स्वर्ण बटोरे। पदकों की गिनती बढ़ाने के इतर भी खिलाड़ियों के हार नहीं मानने के जज्बे ने लोगों को ज्यादा चौंकाया। कुछ तो ऐसे भी मुकाबले रहे जिसमें भारत को 'अंडर डॉग्स' की तरह देखा गया था, मगर आखिर में भले पदक न मिले हो पर कड़ी चुनौती पेश कर खिलाड़ियों ने भविष्य की उम्मीदों को जरूर बल दिया।

हौसलों और जज्बों के बलबूते सवा अरब भारतीयों की उम्मीदों को उड़ान देने की मंशा से 220 खिलाड़ियों का दल राष्ट्रमंडल खेल-2018 के लिए गोल्ड कोस्ट (ऑस्ट्रेलिया) पहुंचा था। और अब जब इस खेल मेले का समापन हुआ तो भारतीय उम्मीदों की झोली में 66 पदक थे.. जो दर्शातें है कि खिलाड़ियों ने किस हद तक देशवासियों की आस और विश्वास को पंख दिए हैं। इन पदकों से सिर्फ एक खिलाड़ी या प्रशंसक के तौर पर ही नहीं बल्कि भारतीय होने के गर्व को भी बुलंदी मिली है। 21वें राष्ट्रमंडल खेल में भारतीय दल का प्रदर्शन पूर्व के दो गेम्स वर्ष 2004 ग्लास्गो एवं वर्ष 2010 नई दिल्ली राष्ट्रमंडल खेल से ही थोड़ा पीछे रह गया। मगर खुशी यह रही कि भारतीय दल ने इस बार सोने पर ज्यादा निशाना लगाया।

राष्ट्रमंडल खेल में भारत के लिए पदक प्राप्ति की खुशी के अलावा भी कुछ खास रहा तो वह था युवाओं का आगे आकर जिम्मेदारी उठाने का साहस। भारतीय पदक तालिका में कई ऐसे मेडल हैं जिसे युवाओं ने अपने हौसलों के बल पर जीता है। निशानेबाजी में स्वर्ण जीतने वाले अनीश भानवाला की उम्र मात्र 15 साल हैं। वहीं, शूटर मनु भाकर 16 वर्ष की हैं। ऐसे कई खिलाड़ी हैं जिनकी उम्र 16 से 20 वर्ष की है, उन्होंने अपने लगन और मेहनत के बल पर विदेशी धरती पर देश का मान बढ़ाया। मनु भाकर, मेहुली घोष और अनीष भानवाला की युवा निशानेबाजी तिकड़ी, मनिका बत्रा का टेबल

टेनिस में ऐतिहासिक प्रदर्शन और भाला फेंक में नीरज चोपड़ा के स्वर्ण पदक ने साबित किया कि भारत के अगली पीढ़ी के स्टार खिलाड़ी दुनिया को चुनौती देने के लिए तैयार हैं।

इसके अलावा, अनुभवी खिलाड़ियों ने भी अपनी प्रतिभा को पदक में बदलने का इतिहास दोहराया। इनमें 48 किग्रा बॉक्सिंग में स्वर्ण पदक जीतने वाली 35 वर्षीय एमसी. मैरीकॉम का नाम प्रमुख है। इसके अलावा, साइना नेहवाल का बैडमिंटन में एकल व टीम स्पर्धा में स्वर्ण, सुशील कुमार का कुश्ती(74 किग्री वर्ग) में स्वर्ण जीता। महिला सशक्तिकरण की दिशा में भारत जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है, राष्ट्रमंडल खेल-2018 को उसकी बानगी भी कहा जा सकता है। यहां आधी आबादी ने शेष आबादी का कदम से कदम मिलाकर साथ दिया है। कई मौके पर तो आधी आबादी ने शेष को भी पीछे छोड़ दिया, क्योंकि राष्ट्रमंडल खेल में शुरुआत में ज्यादातर पदक महिलाओं के ही खाते में थे। इनमें कुछ महिला खिलाड़ियों ने तो कई रिकॉर्ड भी कायम किए। जैसे एथलेटिक्स-डिस्कस थ्रो में रजत पदक जीतने वाली सीमा पुनिया, लगातार चार राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वाली पहली भारतीय हैं। वहीं, मनिका बत्रा ने टेबल टेनिस में पहली बार स्वर्ण दिलाया। इतना ही नहीं, 22 वर्षीय मनिका ने टेबल टेनिस के महिला टीम इवेंट में स्वर्ण, महिला डबल्स मुकाबले में रजत और मिश्रित युगल में कांस्य पदक जीता। मणिपुर की एस. मीराबाई चानू ने वेटलिफ्टिंग (48 किग्रा वर्ग) में छह रिकॉर्ड तोड़ते हए भारत के लिए सोना जीता। वाराणसी के गांव दादुपुर की पूनम यादव ने 69 किग्रा वजन वर्ग में वेटलिफ्टिंग में स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। इस तरह पूनम ने वर्ष 2014 में रजत पदक जीतने के बाद लगातार दूसरी बार राष्ट्रमंडल खेल में पदक जीता।

इस राष्ट्रमंडल खेल की प्रमुख खासियत यह रही कि भारतीय खिलाड़ियों ने विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करके अपना रास्ता बनाया। जिस तरह से जेवलिन थ्रो में नीरज चोपड़ा ने कमाल किया, वह शानदार था। नीरज के कमाल के कारण ही राष्ट्रमंडल गेम्स में जेवलिन थ्रो में पहली बार भारत को गोल्ड मिला। वहीं, कुछ ऐसे भी युवा खिलाड़ी रहे जिन्होंने पदक भले न जीता हो लेकिन यह अहसास करा दिया है कि उनकी नींव पक्की है और भविष्य में पदक भी आएंगे। इनमें मोहम्मद अनस 400 मीटर दौड़ में भले ही ब्रॉन्ज से चूक गए पर अपने प्रदर्शन से सबका ध्यान खींचा। मो. अनस ने मात्र 45.31 सेकेंड में दौड़ पूरी कर एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। दूसरी ओर, हिमा दास ने 400 मीटर दौड़ के फाइनल में जगह बनाई, मगर पदक तक नहीं पहुंच सकी।

पूर्व भारतीय महिला एथलीट पीटी उषा का मानना है कि जिस तरह का प्रदर्शन भारतीय खिलाड़ियों का रहा है, उससे ओलिंपिक 2024 में पदकों की आस बढ़ी है। टेबल टेनिस, निशानेबाजी और कुश्ती में पिछले दिनों युवाओं की एक नई खेप सामने आई है, जिसने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपना जलवा बिखेरा है। गोल्ड कोस्ट में उसका दमखम साफ नजर आया। बॉक्सिंग और बैडमिंटन में भी भारत की स्थिति मजबूत है। जो खेलों में बेहतर भविष्य को परिलक्षित करते हैं।

पूर्व भारतीय महिला एथलीट पीटी उषा का मानना है कि जिस तरह का प्रदर्शन भारतीय खिलाड़ियों का रहा है, उससे ओलिंपिक 2024 में पदकों की आस बढ़ी है। टेबल टेनिस, निशानेबाजी और कुश्ती में पिछले दिनों युवाओं की एक नई खेप सामने आई है, जिसने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपना जलवा बिखेरा है। गोल्ड कोस्ट में उसका दमखम साफ नजर आया। बॉक्सिंग और बैडमिंटन में भी भारत की स्थिति मजबूत है। जो खेलों में बेहतर भविष्य को परिलक्षित करते हैं।

भारतीय खिलाड़ियों के इस शानदार प्रदर्शन के पीछे समाज में खेल को लेकर बदल रही धारणा का बड़ा हाथ है। खेल को जीवन का जरूरी अंग मानने और इसमें करियर बनाने की संभावनाएं तलाशने की कोशिश में ही पदक विजेताओं की फेहरिस्त तैयार हो सकी है। उस पर युवाओं को मौके देने के लिए सरकार भी जागरूक हुई है। जिसके द्वारा खोली गई कई नई अकादमियों ने विश्व पटल पर देश का मान बढ़ाने वाले युवाओं को तैयार किया। हालांकि अब भी खेलों को प्रोत्साहन देने के प्रयासों में थोड़ी और गति लाने की जरूरत है। खेलों के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर को देशभर में फैलाना होगा। इस प्रयासों के बाद कई और युवा आगे आकर अपने हुनर का प्रदर्शन करेंगे और पदकों की संख्या में इजाफा करते हुए देश को और गौरवान्वित कर सकेंगे। ■

राष्ट्रमंडल खेल-2018

एथलेटिक्स:
नीरज चोपड़ा, पुरुष जैविलन थ्रो, स्वर्ण
सीमा पुनिया, महिला डिस्कस थ्रो, रजत
नवजीत ढिल्लन, महिला डिस्कस थ्रो, कांस्य

बैडमिंटन
साइना नेहवाल, महिला एकल, स्वर्ण
--------, मिश्रित टीम इवेंट, स्वर्ण
सात्विक रेंकीरेड्डी/ चिराग शेट्टी, पुरुष युगल, रजत
किदांबी श्रीकांत, पुरुष एकल, रजत
पुसारला वेंकट, महिला एकल, रजत
अश्विनी पोनप्पा/सिक्की रेड्डी, महिला युगल, कांस्य

मुक्केबाजी
गौरव सोलंकी, पुरुष- 52 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
विकास कृष्णन, पुरुष- 75 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
एमसी मैरी कॉम, महिला- 45-48 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
सतीश कुमार, पुरुष- 91+ किग्रा वर्ग, रजत
अमित, पुरुष- 46-49 किग्रा वर्ग, रजत
मनीष कौशिक, पुरुष- 60 किग्रा वर्ग, रजत
मो. हुसामुद्दीन, पुरुष-56किग्रा वर्ग, कांस्य,
मनोज कुमार, पुरुष- 69 किग्रा वर्ग, कांस्य
मनम तंवर, पुरुष- 91 किग्रा वर्ग, कांस्य

पैरा पॉवरलिफ्टिंग
सचिन चौधरी, पुरुष हैवीवेट, कांस्य

निशानेबाजी
जीतू राय, पुरुष- 10 मीटरएयर पिस्टल, स्वर्ण
अनिश, पुरुष- 25 मी. रैपिड फायर पिस्टल, स्वर्ण
संजीव राजपूत, पुरुष- 50 मी. रायफल 3 पोजीशन, स्वर्ण
मनु भाकर, महिला- 10 मी. एयर पिस्टल, स्वर्ण
हिना सिंधु, महिला- 25 मी. पिस्टल, स्वर्ण
तेजस्वनी सावंत, महिला- 50 मी. रायफल 3 पोजीशन, स्वर्ण
श्रेयासी सिंह, महिला डबल ट्रैप, स्वर्ण
हिना सिंधु, महिला- 10 मी. एयर पिस्टल, रजत
मेहुली घोष, महिला- 10 मी. एयर रायफल, रजत
एंजुम मौदगिल, महिला- 50 मी. रायफल 3 पोजीशन, रजत
तेजस्वनी सावंत, महिला- 50 मी. रायफल प्रोन, रजत
ओम मिश्रवाल, पुरुष- 10 मी. एयर पिस्टल, कांस्य
रवि कुमार, पुरुष- 10 मी. एयर रायफल, कांस्य
ओम मिश्रवाल, पुरुष- 50 मी. पिस्टल, कांस्य
अंकुर मित्तल, पुरुष- डबल ट्रैप, कांस्य
अपूर्वी चंदेला, महिला- 10 मी. एयर रायफल, कांस्य

स्क्वैश
चिनप्पा जोशना/ दीपिका पल्लीकल कार्तिक, महिला युगल, रजत
दीपिका पल्लीकल कार्तिक / सौरव घोषाल, मिश्रित युगल, रजत

टेबल टेनिस
----------, पुरुष टीम, स्वर्ण
मनिका बत्रा, महिला एकल, स्वर्ण
----------, महिला टीम, स्वर्ण
शरत अचंता / साथियां ग्नानासेकरण, पुरुष युगल, रजत
मनिका बत्रा / मौमा दास, महिला युगल, रजत
हरमीत देसाई / सनिल शंकर शेट्टी, पुरुष युगल, कांस्य
अचंता शरत, पुरुष एकल, कांस्य
साथियां ग्नानासेकरण / मनिका बत्रा, मिश्रित युगल, कांस्य

भारोत्तोलन
सतिश कुमार सिवालिंगम, पुरुष- 77 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
वेंकट राहुल रगाला, पुरुष- 85 77 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
साइखोल मीराबाई चानू, महिला- 48 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
खुमुकचन संजीता चानू, महिला- 53 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
पूनम यादव, महिला- 69 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
प्रदीप सिंह, पुरुष- 105 किग्रा वर्ग, रजत
गुरुराजा, पुरुष- 56 किग्रा वर्ग, रजत
दीपक लाथेर, पुरुष- 69 किग्रा वर्ग, कांस्य
विकास ठाकुर, पुरुष- 94 किग्रा वर्ग, कांस्य

कुश्ती
सुमित, पुरुष फ्रीस्टाइल 125 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
राहुल अवारे, पुरुष फ्रीस्टाइल 57 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
बजरंग, पुरुष फ्रीस्टाइल 65 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
सुशील कुमार, पुरुष फ्रीस्टाइल 74 किग्रा वर्ग
स्वर्ण, विनेश फोगट, महिला फ्रीस्टाइल 50 किग्रा वर्ग, स्वर्ण
मौसम खत्री, पुरुष फ्रीस्टाइल 97 किग्रा वर्ग, रजत
बबिता कुमारी, महिला फ्रीस्टाइल 53 किग्रा वर्ग, रजत
पूजा ढांडा, महिला फ्रीस्टाइल 57 किग्रा वर्ग, रजत
सोमवीर, पुरुष फ्रीस्टाइल 86 किग्रा वर्ग, कांस्य
साक्षी मलिक, महिला फ्रीस्टाइल 62 किग्रा वर्ग, कांस्य
दिव्या काकरन, महिला फ्रीस्टाइल 68 किग्रा वर्ग, कांस्य
किरन, महिला फ्रीस्टाइल 76 किग्रा वर्ग, कांस्य ■

(लेखक जम्मू-कश्मीर अध्ययन केन्द्र से जुड़े हैं)

विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा पर्यावरण पर आयोजित कार्यशाला संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के आयाम विकासार्थ विद्यार्थी (एसएफडी) के द्वारा कोंकण प्रांत के खारघर में पर्यावरण पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में कोंकण प्रांत के ग्यारह जिलों से 30 से अधिक प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला मुख्य रूप से पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन पर केन्द्रित थी। कार्यशाला को संबोधित करते हुए चर्चित मराठी फिल्म 'नदी वाहते' के निर्देशक व लेखक संदीप सावंत ने कहा कि जब तक पर्यावरण संतुलित है तभी तक नदियां बह रही हैं। पर्यावरण असंतुलन के कारण ही ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हुई है। पर्यावरण के प्रति हम सभी को अपनी जिम्मेवारी सुनिश्चित करनी होगी तभी इस समस्या का निदान संभव हो पायेगा। इस दौरान उन्होंने अपनी फिल्म से जुड़े रोचक तथ्यों को भी साझा किया एवं कार्यकर्ताओं द्वारा पूछे गये सवालों का सहजतापूर्वक उत्तर दिया। बता दें कि एसएफडी के द्वारा प्रकृति को बचाने के लिए देश भर में संगोष्ठी एवं कार्यशाला के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

एसएफडी के प्रमुख सचिन दवे ने नर्मदा स्वच्छता अभियान में एसएफडी द्वारा किये गये कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने स्वच्छता अभियान से जुड़े विविध चरण, लोक सहभाग, प्रशासन का सहकार्य एवं अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश में चलाये गये जनजागरण के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने वर्ष भर में एसएफडी द्वारा चलाये जाने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। वहीं पर्यावरण दक्षता मंच की संगीता जोशी ने कहा कि पर्यावरण को बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है। अगर हम पर्यावरण को संरक्षित नहीं करेंगे तो कल जीना मुहाल हो जाएगा। एसएफडी के कोंकण प्रांत संयोजक मिहिर देसाई की मानें तो एसएफडी द्वारा पूरे प्रांत में कचरा समस्या, गिरते जल स्तर, सिमटती वन सम्पदा इत्यादि के समाधान हेतु जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। कार्यक्रम में अभाविप, कोंकण प्रांत मंत्री अनिकेत ओव्हाल, मध्यप्रदेश के समाजसेवी श्री बाहेती, कोंकण प्रांत के 11 जिलों के प्रतिनिधि, गोवा, रायगड़, रत्नागिरी, मुंबई, ठाणे आदि से विविध 36 छात्रों, समेत सैंकड़ो अभाविप कार्यकर्ता मौजूद थे। ■

अभाविप द्वारा आयोजित मीडिया कार्यशाला में छात्रों ने सीखे प्रभावी संवाद के गुर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) मेरठ प्रांत के द्वारा प्रभावी संवाद हेतु प्रांतीय मीडिया कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन नोएडा स्थित मीडिया संस्थान "सुदर्शन न्यूज" में किया गया था, जिसमें मेरठ और ब्रज प्रान्त के 120 कार्यकर्ताओ ने शिरकत की। कार्यक्रम को चार सत्रों में विभाजित किया गया था।

प्रथम सत्र उद्घाटन सत्र का था, उद्घाटन सत्र में कार्यशाला की भूमिका के बारे में बताया गया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में "आजादी में संघ की भूमिका" विषय पर बोलते हुए पांचजन्य पत्रिका के कार्यकारी संपादक आलोक ने कहा कि देश की आजादी में संघ ने भी

अपने खून पसीने को बहाया है, ऐसे में संघ के योगदान को भुलाया नही जा सकता। वहीं "सामाजिक समरसता और संघ" विषय पर लोकसभा टीवी के संपादक श्याम किशोर सहाय ने कहा कि देश के विकास के लिए सामाजिक एकता जरूरी है और यह सामाजिक समरसता से ही संभव है। देश में जब समता आएगी तो सामाजिक एकता अपने आप आ जाएगी। जबकि "युवा और राष्ट्रीय चेतना" विषय पर दूरदर्शन के वरिष्ठ पत्रकार अशोक श्रीवास्तव ने युवाओ को देश की पूंजी बताया और कहा कि आज जबकि दुनिया के तमाम देशों में युवा शक्ति का अभाव है भारत का चेहरा उन सबमें अलग दिखाई देता है। ऐसे में भारत की छात्र शक्ति को सीखने के बेहतर अवसर देकर उसकी प्रतिभा को निखारना, समाज और सरकार की जिम्मेदारी है।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र में प्रिंट मीडिया पर बोलते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के नोएडा कैम्पस प्रभारी डॉ अरुण कुमार भगत ने कहा कि प्रिंट मीडिया अभिव्यक्ति का एक मजबूत माध्यम है जिसमें व्यक्ति लिखकर अपनी बात को दूसरों तक आसानी से पहुंचा सकता है। उन्होने प्रेस रिलीज (विज्ञप्ति)बनाने के कई तकनीकी पक्षों से भी कार्यकर्ताओ को परिचित कराया। वहीं इंडिया न्यूज के संपादक यतेन्द्र ने मीडिया के महत्व के बारे में बताया।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर बोलते हुए न्यूज़ वर्ल्ड इंडिया की वरिष्ठ एंकर मीनाक्षी श्योरन ने कहा कि पत्रकारिता एक जुनून है जिसमें व्यक्ति को बिना थके और रुके समाज के हित मे कार्य करना होता है। उन्होंने कहा कि अगर देश को आगे लेकर जाना है तो सभी को एकसमान विचारधारा के तहत ही कार्य करना होगा क्योकि विचारधारा के बंटते ही देश का नुकसान शुरू हो जाता है।

सोशल मीडिया पर अपने संबोधन में अभाविप के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक साकेत बहुगुणा ने कहा कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया आमजन से जुड़ने का बेहतर विकल्प तैयार हो गया है। उन्होंने कार्यकर्ताओ को इससे जुड़कर लाभ उठाने की जरूरत पर बल देते हुए सोशल मीडिया इस्तेमाल के तकनीकी पहलुओं से भी परिचित कराया। तीसरे सत्र का संचालन एमसीयू के प्राध्यापक राकेश योगी ने किया।

चतुर्थ और समापन सत्र में सुदर्शन न्यूज़ के एंकर सुरेश चव्हाण ने कार्यकर्ताओं के साथ जनसंख्या वृद्धि विषय पर संवाद स्थापित किया। समापन सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहा कार्यकर्ताओ में देश के प्रति जोश जुनून और कुछ नया करने की भावना पैदा करने के लिए समय-समय पर अभाविप द्वारा ऐसे कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस दौरान कार्यशाला का संचालन व संयोजन प्रान्त मीडिया संयोजक दीक्षान्त सूर्यवंशी कर रहे थे। ■

संसद गतिरोधः आखिर कौन है जिम्मेदार..?

संसद देश की सर्वोच्च पंचायत है। वहाँ देशहित से जुड़े सभी अहम मुद्दों पर चर्चा की जाती है। कानून बनाए जाते हैं, जनता की समस्याओं पर बात होती है और उनका समाधान खोजा जाता है। लेकिन सत्ता पक्ष और विपक्ष के राजनीतिक द्वेष के चलते बजट सत्र के दूसरे चरण में संसद की कार्यवाही हंगामें की भेंट चढना बेहद शर्मनाक और चिंताजनक है। इससे ना केवल देश के करोड़ो रुपयों की बर्बादी हुई है बल्कि कई अहम विधेयक भी अधर में लटक गए हैं। हालांकि बजट सत्र होने के कारण यह सत्र मुख्य रूप से वित्तीय कामकाज को समर्पित था। इस वर्ष लोकसभा की 29 और राज्यसभा की 30 बैठके हुई। लोकसभा की कार्यवाही केवल 34 घंटे 5 मिनट ही चल सकी। जबकि 127 घंटे 45 मिनट कार्य बाधित रहा। राज्यसभा में भी कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिला। उच्च सदन में 44 घंटे ही कामकाज चल पाया। वहीं 121 घंटे बर्बाद हो गए और 27 दिन तक सदन में प्रश्नकाल नहीं हो सका। कारण यही है कि इस बार 18 वर्ष पहले वर्ष 2000 में हुये सबसे कम संसदीय कामकाज का रिकॉर्ड भी टूट गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार संसद सत्र के दौरान प्रति मिनट ढाई लाख रुपये का खर्च आता है। जब संसद की कार्यवाही ना चलने से देश के राजकोष पर करोड़ो रुपये का भर पड़े तो क्या यह चिंता का विषय नहीं है? राष्ट्रीय छात्रशक्ति के लिए उत्कर्ष श्रीवास्तव ने संसद के गतिरोध पर आम जनता के विचार जाने.....

वैसे तो संसद के कार्यों में विपक्षी दलों द्वारा व्यवधान उत्पन्न करना कोई नई बात नही है लेकिन लगातार पन्द्रह दिनों तक कोई कामकाज ना हो तो चिंता होना स्वाभाविक है। लोकतंत्र में परिचर्चा, भाषणबाजी, शोर शराबा, नोक झोंक, दोषारोपण कोई नई बात नही है या फिर कभी कभी सदन बहिर्गमन भी स्वीकार्य है लेकिन कुछ वर्षों से यह नियमित रुप से होना लोकतंत्र के लिए कतई जायज़ नही है।

— **कुमारी अमिता राय,** पश्चिम बंगाल

जब से संसद के बजट सत्र का दूसरा चरण शुरू हुआ है तब से नीरव मोदी मामला, राफेल सौदा, उत्तर प्रदेश एनकाउंटर, मोसुल में 39 भारतीयों को हत्या और फिर सरकार के ख़िलाफ़ अविश्वास प्रस्ताव जैसे मुद्दों को लेकर संसद की कार्यवाही बाधित हो रही है। क्या ये सब मुद्दे इतने जटिल हैं कि हमारे सांसदगण इसे सुलझा नही रहे या सुलझाना ही नही चाहते?

— **धनंजय सिंह**, इलाहाबाद

हमारे सांसदों को यह समझना चाहिए कि जनता ने उन्हें देशहित से जुड़ी गंभीर समस्याओं पर विचार विमर्श करने और उस दिशा में ठोस कदम उठाने के लिए संसद में भेजा है न कि धरना प्रदर्शन, नारेबाज़ी और शोर शराबा करके इसे ठप्प करने के लिए। हमारे माननीय सांसदों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जनता के हित में कार्य करना चाहिए।

— **मोहम्मद सईम,** दिल्ली

एक दिन की बर्बादी पर तकरीबन 18 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान देश को होता है।इससे भी ज्यादा नुकसान देश की अर्थव्यवस्था का दुनियाभर में भारत की छवि का और देश की आम जनता के विश्वास का होता है। केंद्र में सरकार चाहे जिस पार्टी की हो, उसकी कोशिश संसद को कम से कम चलाने,उसकी उपेक्षा करने या उससे मुंह चुराने और उसका मनमाना इस्तेमाल करने की रही है। उसकी इसी प्रवृत्ति के चलते देश की सबसे बड़ी पंचायत में हंगामा और नारेबाजी अब हमारे संसदीय लोकतंत्र का स्थायी भाव बन चुका है। पिछले कुछ दशकों के दौरान शायद ही संसद का कोई सत्र ऐसा रहा हो, जिसका आधे से ज्यादा समय हंगामे में जाया न हुआ हो।

—**दीक्षा नागवंशी,** भोपाल

18 वर्ष पहले सन 2000 में हुए सबसे कम संसदीय कार्य का रिकॉर्ड भी इस बार टूट गया है। पहले वर्ष 2000 को संसद के सबसे कम कामकाज के लिए याद किया जाता था। अब इसके लिए 2018 को याद किया जाएगा। चिंता की बात ये है कि संसद की प्रतिष्ठा को दांव पर लगाने वाले सांसदों में बिल्कुल भी संकोच नही दिखता है। संसद के माध्यम से देश चलाने वाले लोग ऐसा करेंगे तो कैसे चलेगा? क्या हम लोगों ने उन्हें इस काम के लिए चुना है कि वो आये दिन हंगामा करते रहें।

— **शुभा बनर्जी,** रांची

परिषद् गतिविधियाँ

'राष्ट्रीय कला मंच' द्वारा आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह, एकेटीयू के कुलपति प्रा. विनय पाठक, फैजाबाद के महापौर ऋषिकेश पाठक व अन्य

ग्रामीण जीवन प्रत्यक्ष दर्शन (अनुभूति) में सहभागी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 May, 2018
Date of Publishing: 8 May, 2018

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

जनसंख्या स्थिरता कोष

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

प्रेरणा योजना – गरीबी रेखा के नीचे (BPL) परिवार के लिए

इस योजना के अनुसार महिला की शादी 19 वर्ष के बाद हुई हो और पहले बच्चे का जन्म कम से कम 2 वर्ष बाद हुआ हो तो, उसे पुत्र होने की दशा में 10,000/– रुपये अथवा पुत्री होने की दशा में 12,000/– रुपये दिए जाते हैं। दंपत्ति यदि दूसरी संतान में न्यूनतम 3 वर्ष का अंतर रखे हों एवं जन्म के 1 वर्ष के भीतर ही माता या पिता में से किसी एक ने परिवार नियोजन का स्थायी साधन अपनाया हो, तो अतिरिक्त 5,000/– रुपये (पुत्र) या 7,000/– रुपये (पुत्री) दिए जाते हैं। पुरस्कार की राशि दम्पत्ति को सीधे उसके बैंक खाते में दिए जाएंगे (डी.बी.टी. प्रणाली द्वारा)।

आदर्श दंपत्ति के लिए अनिवार्य योग्यताएँ :

1. दंपत्ति गरीबी रेखा से नीचे हो (बी.पी.एल.)
2. महिला की शादी सन् 2011 से पहले नहीं हुई हो
3. महिला की शादी 19 वर्ष बाद हुई हो
4. पहले बच्चे का जन्म शादी के कम से कम 2 वर्ष बाद हुआ हो
5. दूसरे बच्चे का जन्म, पहले बच्चे के जन्म के कम से कम 3 वर्ष बाद हुआ हो और
6. दूसरे बच्चे के जन्म के एक वर्ष के भीतर दंपत्ति के किसी एक सदस्य ने स्थायी परिवार नियोजन अपनाये हों तो

उपरोक्त प्रथम चार (1–4) शर्तें पूर्ण करने पर प्रोत्साहन राशि :

- रुपये 10,000/– यदि पहला बच्चा पुत्र हो
- रुपये 12,000/– यदि पहला बच्चा पुत्री हो

उपरोक्त सभी छह (1–6) शर्तें पूर्ण करने पर प्रोत्साहन राशि :

- रुपये 15,000/– यदि दोनों पुत्र हों
- रुपये 17,000/– यदि एक पुत्र एवं एक पुत्री हो
- रुपये 19,000/– यदि दोनों पुत्री हों

इस पुरस्कार के लिये निम्नलिखित प्रमाण–पत्रों की आवश्यकता है :

1. दंपत्ति का बी.पी.एल. प्रमाण–पत्र
2. माता का जन्म तिथि प्रमाण–पत्र (स्कूल/बोर्ड/जन्म एवं मृत्य रजिस्ट्रार द्वारा जारी/आधार कार्ड)
3. दंपत्ति का विवाह प्रमाण–पत्र (रजिस्ट्रार विवाह/अधिकृत विवाह रजिस्ट्रार द्वारा जारी)
4. प्रथम बच्चे का जन्म तिथि प्रमाण–पत्र (रजिस्ट्रार जन्म एवं मृत्यु द्वारा जारी)
5. द्वितीय बच्चे का जन्म तिथि प्रमाण–पत्र (रजिस्ट्रार जन्म एवं मृत्यु द्वारा जारी)
6. माता या पिता किसी एक का नसबंदी प्रमाण–पत्र (सरकारी अस्पताल द्वारा जारी)

नोट :

- अधिक जानकारी के लिये टोल फ्री नंबर – **1800–11–6555** पर कॉल करें
- सभी प्रमाण–पत्रों की फोटोकॉपी किसी राजपत्रित अधिकारी से सत्यापित होनी चाहिए।
- सभी सत्यापित प्रमाण–पत्र मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के कार्यालय में जमा कराएं।

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनहित में जारी

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018